शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321&9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

o"k 21] vad 02] uoEcj 2021

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

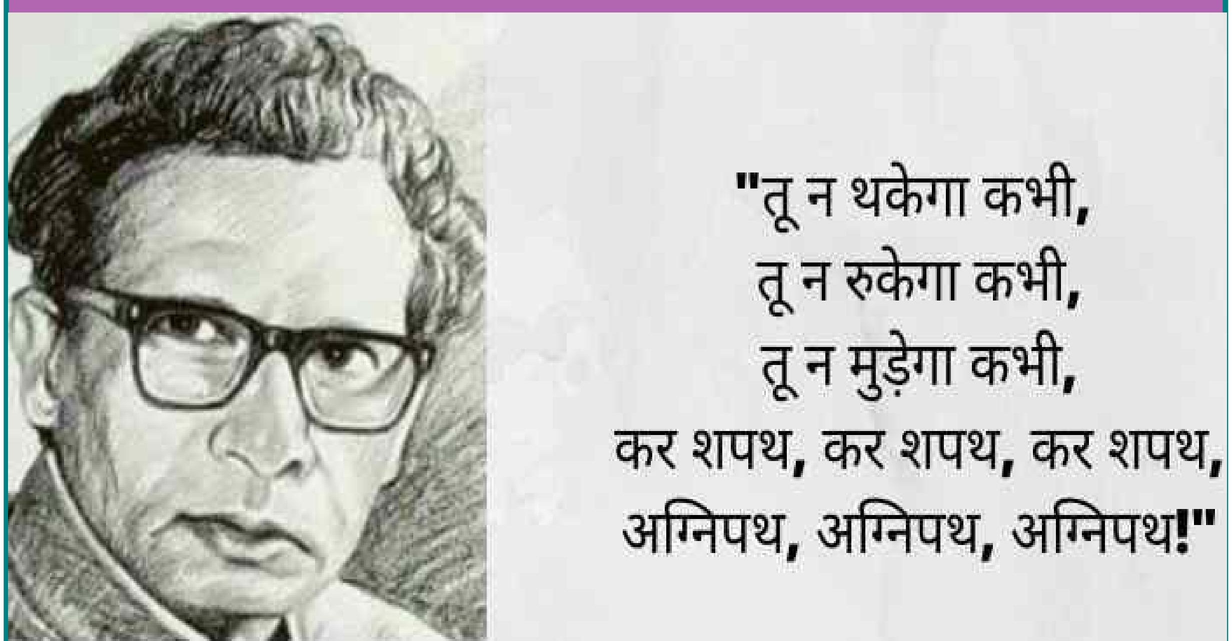

eY; %
15 #i;s

चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तेः 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. प्रतियोगिता दो चरणों में होगी. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। आयोजन स्थल पर ही एक विषय दिया जाएगा। दिए गए विषय पर 30 मिनट के अंदर रचना लिखकर देनी होगी और उसी रचना का काव्य पाठ करना होगा। 3. द्वितीय चरण के विजेता को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा शेष प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

चतुर्थ लघु कथा सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5001/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तेः 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. मौलिकता का प्रमाण पत्र देना अनिवार्य होगा। प्रतियोगिता के दो चरण है। दूसरे चरण के समस्त प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र दिया जाएगा। विजयी प्रतिभागी को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। विजेता को ५००१रुपये नगर, स्मृति चिन्ह तथा लघु कथा सम्राट का ताज प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये तीन सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;ूचvkbZ,u0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 tuojh 2022

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०ः 9335155949,
sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः21, अंकः 02
दिसम्बर : 2021

इस अंक में......

सोच और नजरिया बदलिए नजारे तो स्वतः बदल जाएँगे
-------â..............6

साहित्य और समाज------08

गणेश जी के वाहन मूषक की महत्त
..............--------------11

nfu;k dh lcls iqjkuh Hkk"kk gS % laLd`r
--------------------------------12

LFkk;h LrEHk

अपनी बातः **वर्तमान परिवेश में बुजुर्गों की दशा और दिशा** 04

सर्दियों में स्वस्थ रहने के खास सुझाव 15

सोचनीय सबहीं बिधी सोई 16

काम की बातें 22

`dfork,@xhr@xt y% डॉ0 गौरी शंकर श्रीवास्तव, श्री हरिहर चौधरी, सूरज तिवारी 'मलय', निगम प्रकाश कश्यप, कुं बीरेन्द्र सिंह विद्रोही, डॉ0 अनिल शर्मा 'अनिल', श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', जे.वी.नागरत्नमा, अजय द्विवेदी 21, 22–24

dgkuh% बगुलाराम की नीयति, तपती रेतल 18, 27

साहित्य समाचार, ...25

y?kq dFkk,% अशफाक कादरी, शबनम शर्मा, जे.वी.नागरत्नमा 33

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

laj{kd lnL;
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सहयोगी संपादक
डॉ० सीमा वर्मा

foKkiu izc/kd
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;wjks
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dk0% 09335155949
b&esy%vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in voSrfud gSa
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV% पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

वर्तमान परिवेश में बुजुर्गो की दशा और दिशा

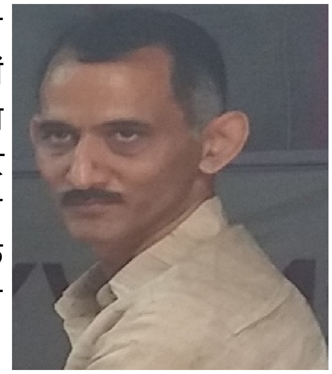

अभी कुछ दिनों पहले मैंने एक मोबाइल संदेश पढ़ा। जिसमें एक बुजुर्ग ने अपने दूसरे बुजुर्ग साथी को फोन किया। सामान्य बातचीत के बाद साथी ने बच्चों के बारे में पूछा तो पहले बुजुर्ग ने बताया-मेरी छोटी बेटी न्यूयार्क में है, मेरा छोटा बेटा शिकागो में है, मेरा बड़ा बेटा और बहू टोरंटो में है। दूसरा साथी बोला-अरे वाह, बहुत खूब। आप बहुत किस्मत वाले हो लेकिन आप कहां हो? पहला साथी-हम पति, पत्नी वृद्धाश्रम में है। यह एक महज संदेश नहीं बल्कि आज के कथित पढ़े-लिखे, एडवांस दुनिया का कड़वा सच है। हम बहुत आगे बढ़ गये लेकिन अपने भारतीय संस्कारों को उतने ही पीछे ढकेलते चले गए।

उत्साह शक्तिहीनत्वाद् वृद्धों दीर्घामयस् तथा।
स्वैरेव परिभूयेते द्वावश्येतावसंशयम्।।

अर्थात् इसमें कोई संदेह नहीं कि वृद्ध व्यक्ति में उत्साह एवं शक्ति की कमी होती है क्योंकि वे स्वजनों द्वारा ही तिरस्कृत होते है। आज की युवा पीढ़ी बुजुर्गो को बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। शायद भौतिकतावादी इस युग में उन्हें धन ही सबसे बड़ी चीज दिखती है। परिवार के सदस्यों के बीच वह प्यार, अपनापन और सम्मान अब देखने को नहीं मिलता। जिस घर को हमारा घर कहकर पुकारा जाता था, वह घर अब टुकड़े-टुकड़े होकर तेरे-मेरे घर में परिवर्तित हो रहा है। हम वसुधैव कुटुंबकम् की रीति के पालक रहे है। अर्थात पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है, किंतु सच्चाई यह है कि हम अपने परिवार को भी अपना नहीं समझते। वर्तमान परिवेश के लिए दोनों पक्ष नई व पुरानी पीढ़ी जिम्मेदार है। हम नई पीढ़ी अंग्रेजीयत की शिक्षा तो देते है लेकिन भारतीय संस्कारों की शिक्षा न तो अब विद्यालयों में मिलती है और न घर में। घर का प्रत्येक सदस्य ह्वाट्सएप, फेसबुक में मग्न है, उसे किसी की बात सुनने की फूर्सत नहीं है। नई पीढ़ी सोचती है हम बुजुर्गो को ढोये, अकेले फ्लैट लेकर रहे, किराये पर कमरा लेकर पति पत्नी और बच्चों के साथ रहे। जहां कोई टोकने वाला न हो, रोकने वाला न हो। बुजुर्ग दम्पत्ति सोचते है हम केवल आदेश दे और उसका अनुपालन हो। पूरा घर मेरे हिसाब से चले। जबकि अधिकांश दम्पत्ति नौकरी करते है। मेरे हिसाब से जहां परिवार के बुजुर्ग को छोटे-मोटे कार्यो में हाथ बटाने में तौहीन नहीं बल्कि खुशी ढूँढनी चाहिए तो नई पीढ़ी को बुजुर्गो का मान-सम्मान, मर्यादा रखना होगा। सुबह-शाम, चाय-नाश्ता, दो-चार अतिरिक्त रोटी सेंकने के बदले आपको एक सुरक्षा कवच मिल रहा है। आप नौकरी पर हो, घर पर आपके बच्चों व आपके घर की जिम्मेदारी से देखभाल करने वाला मिल रहा है।

परिवार मर्यादाओं से बनता है। परस्पर कर्तव्य होते हैं, अनुशासन होता है और उस नियत परम्परा में कुछ जनों की इकाई हित के आसपास जुटकर व्यूह में चलती है। उस इकाई के प्रति हर सदस्य अपना आत्मदान करता है। हर एक उससे लाभ लेता है और अपना त्याग देता है। आर्थिक विकास के कारण गांवों से शहरों की तरफ जो लोगों का पलायन बढ़ा तो छोटे परिवार रखना आवश्यक हो गया। ऐसे परिवार में व्यक्तिगत अधिकारों पर ज्यादा जोर दिए जाने के फलस्वरूप घर के वातावरण में परिवर्तन आने लगा। बच्चों के ऊपर अंकुश की कमी हो जाने से युवा पीढ़ी अधिक उच्छृंखल हो गई। बुजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी आने लगी है। वे अपने को उपेक्षित महसूस करते हैं। अकसर ही घर के बुजुर्गों को यह कहते सुना जा सकता है कि हमारे जमाने में इतना बड़ा परिवार था

और हम सब दुःख-सुख बांट कर काफी हंसी-खुशी के दिन बिताया करते थे। वे बातें आज कहां!

आज तो जीवन बिल्कुल यांत्रिक हो गया है। रिश्ते भी औपचारिकता तक सीमित हो गये हैं जिसमें आपसी स्नेह, माधुर्य, सौहार्द्र और परस्पर विश्वास की कमी आ गई है। आज यह बहुत जरूरी है कि हमारो सम्बन्धों में मजबूती, एकजुटता, दृढ़ता व विश्वास की दृढ़ता हो।

आधुनिक युग में अगर सबसे ज्यादा परिवर्तन हुआ तो नारियो में हुआ। 'नारी' जो हमेशा से एक सुसंस्कृत परिवार और एक सभ्य समाज की नींव रही है. नारियों ने इस युग में अपने आप को सुशिक्षित और स्वावलम्बी बनाया है जो उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है और प्रशंसा के काबिल भी है. नारियों ने अपना सम्मान तो पा लिया लेकिन अपनी सबसे बड़ी और कीमती धरोहर 'संस्कार' को खोती चली गई। नारियों ने घर की दहलीज पार कर बाहर की दुनिया में अपने आप को स्थापित तो कर लिया परन्तु घर खाली करती चली गई. घर बाहर दोनों की दोहरी भूमिका निभाते निभाते वो एक भरे पूरे परिवार को खो बैठी. उनकी आजादी की चाह ने धीरे-धीरे प्यार और रिश्तो के हर बंधन को खोल दिया. इसका असर आने वाली पीढ़ियों पर पड़ा।

दादा-दादी का सान्निध्य ना मिलने के कारण बच्चों ने आदर सम्मान करना नहीं सीखा. बच्चों ने अपने माँ-बाप को दादा-दादी की सेवा करते भी नहीं देखा तो उन्हें भी अपने माँ-बाप की परवाह नहीं रही. हम रिश्तों के प्रति उनके दिल में कोई भावना ही नहीं दे पाए तो फिर हम कैसे उमींद कर सकते है कि वो कोई रिश्ते निभाये, बुजुर्गों का सम्मान करें।

'एक औरत ही सुसंस्कृत परिवार और सभ्य समाज की नींव होती है' पुरुष की भागीदारी इसमें द्वितीय किरदार के रूप में होती है. औरत में ही कर्तव्यपराण्यता, प्यार, सेवा, संस्कार, और त्याग जैसी भावनाये होती है. भारत का इतिहास ऐसी नारियों की गाथाओं से भरा पड़ा है. मेरा हर नारी से निवेदन है कि वो अपने उत्थान और सम्मान के साथ-साथ अपने संस्कार को भी सजोये रखे. वो संस्कार जिसके कारण भारतवर्ष में नारियों को पूजा जाता है. वरना एक-एक करके हमारे जीवन से हर रिश्ता और उसके प्यार की मिठास खोती चली जाएगी और इसके कसूरवार सिर्फ हम होंगे आनेवाली पीढ़ी नहीं.

आज दादा दादी की कहानियाँ, नाना नानी का प्यार और प्यार भरे रिश्ते समाप्त हो गए और स्वार्थभरे रिश्ते रह गए. आज हालत ये है की लोग अपने पड़ोसी को नहीं जानते क्या ये सभ्यता की निशानी या हमारा अवमूल्यन स्वयं विचार करे?

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

1996 ls =ekfld ,oa 2001 ls ekfld dk :i esa fujUrj izdkf'kr

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक dy] vkt vkSj dy Hkh cgqi;ksxh

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये, पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन–1500/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये [kkrk la[;k–66600200000154, vkbZ,Q,l lh dksM–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें।

सोच और नज़रिया बदलिए

नज़ारे तो स्वतः बदल जाएँगे

कोई भी समाज महिला कामगारों द्वारा राष्ट्रीय आय में किये गए योगदान को दरकिनार नहीं कर सकता। ग्रामीण एवं शहरी दोनों इलाकों में महिलाओं की शिक्षा दर में बढ़ोतरी हुई है। देश की पितृसत्तात्मक व्यवस्था में आधुनिकता के बावजूद कई स्तरों पर महिलाओं को उनका वाजिब हक नहीं मिल पाता।

-आशा त्रिपाठी

उच्च शिक्षित वर्ग और कॉरपोरेट कंपनियों में महिलाएँ चाहे जितनी शोहरत बटोर लें, लेकिन आज भी उन्हें वह महत्व नहीं मिलता, जिसकी वे हकदार हैं। देश के सर्वांगीण विकास में पुरूषों के साथ कदमताल करने वाली महिलाओं के साथ हर स्तर पर भेदभाव अब भी जारी है। यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि महिलाओं की भागीदारी समाज में हर स्तर पर बढ़ी हैं, फिर भी बहुसंख्यक महिलाएँ, जो कामगार हैं, उनके योगदान व उनकी आर्थिक उपादेयता का न तो सही तरीके से आकलन होता हैं और ना ही उन्हें वाजिब हक मिलता हैं। बड़े फलक पर भी देखें तो महिलाओं की बदौलत हम कई पैमानों पर आर्थिक विकास में सफल हुए हैं। कोई भी समाज महिला कामगारों द्वारा राष्ट्रीय आय में किये गए योगदान को दरकिनार नहीं कर सकता। बावजूद इसके, उनको पर्याप्त महत्व नहीं मिलता। हालाँकि, भारत के श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी दुनिया के मुकाबले काफी कम है, फिर भी घरेलू काम में महिलाओं की भागीदारी 75 फीसदी से अधिक हैं। यह सर्वव्यापी है कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों इलाकों में महिलाओं की शिक्षा दर में बढ़ोतरी हुई है। ऑकड़े बताते हैं कि ग्रामीण इलाकों में 15 से 19 आयु वर्ग की लड़कियों में शिक्षा के प्रसार साथ श्रम क्षेत्र में उनकी भागीदारी घटी है। यह अच्छी बात है, लेकिन 20 से 24 की आयु सीमा की लड़कियों के ऑकड़े बताते हैं कि उनके द्वारा प्राप्त शिक्षा का लाभ उन्हें रोजगार में बहुत नहीं मिल पाया है। महिलाओं की क्षमता को लेकर समाज में व्याप्त धारणा का भी अहम योगदान होता हैं। देश की पितृसत्तात्मक व्यवस्था में आधुनिकता के बावजूद कई स्तरों पर महिलाओं को उनका वाजिब हक नहीं मिल पाता। जब तक इस भेदभाव को दूर नहीं किया जाता, तब तक महिला -पुरूष बराबरी, सिर्फ किताबी बाते ही रह जाएँगी। महिलाओं के उत्थान के लिए चले तमाम अभियान व कार्यक्रमों के बावजूद महिला कल्याण की दिशा में आमूल-चूल परिवर्तन न होने के पीछे लोगों का दूषित दृष्टिकोण रहता है। प्रतीत होता है कि यदि महिलाओं के प्रति सोच और नजरिया बदले तो नजारे भी बदलते हुए दिखेंगे।

इस 21वीं सदी के सोलहवें वर्ष में भी महिलाओं के प्रति दूषित दृष्टिकोण रखा जाता है। बीते वर्ष की एक घटना याद आ रही है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए. एस.) अधिकारी स्मिता सब्बरवाल तेलंगाना के मुख्यमंत्री कार्यलय में अतिरिक्त सचिव पद पर तैनात हुई। उनके प्रति राजनीतिक नेताओं और कुछ अधिकारियों की सोच इतनी गंदी थी, जिसकी जितनी भी निन्दा की जाए कम होगी। देश की एक चर्चित अंग्रेजी पत्रिका ने उनके बारे में तमाम तरह की नकारात्मक बातें छापीं। इस पर सब्बरवाल ने पत्रिका को मानहानि का कानूनी नोटिस भेज दिया। बकौल स्मिता सब्बरवाल, मुझे सबसे बुरा यह लगा कि एक पत्रिका जिसे लाखों लोग पढ़ते हैं, वह ऐसा सुझाए कि एक महिला अपनी खूबसूरती की वजह से अपने कॅरियर में आगे बढ़ पा रही है। सोशल मीडिया पर भी कई लोगों ने लेख की निंदा की थी। हालाँकि पत्रिका ने अपने लेख के साथ छापा कार्टून अपनी वेबसाइट से हटा लिया था। इस कार्टून में एक महिला को फैशन शो में हिस्सा लेते

हुए दिखाया गया था। और कुछ नेताओं को बुरी नजर से महिला की तरफ घूरते हुए दिखाया गया था। लेख में ऑफिसर का नाम लिए बगैर लिखा था कि हमेशा साड़ी पहनने वाली महिला एक फैशन शो में पैंट और फ्रिल वाली टॉप में नजर आई, तो फोटो खीचने का अच्छा मौका बना। 15 साल से आई.ए.एस. ऑफिसर स्मिता सबरवाल के मुताबिक यह ओछी पत्रकारिता की मिसाल है। यह महिला विरोधी सेक्सिस्ट सोच है, जो बदलते समाज में अब कम ही लोगों में बची है, पर पत्रिका इस पुरानी सोच को प्रकाशित कर बढ़ावा दे रही है। कई लोग इस तरह के आरोप लंबे समय से लगाते आए हैं कि करीयर मे आगे बढ़ने के पीछे एक महिला का काम नहीं बल्कि उसकी सुंदरता होती है। साड़ी की जगह पैंट-टॉप पहनने पर महिला को अलग नजर से भी देखा जाता रहा है। किंतु इस सोच को पुराना और रूढ़ीवादी बताने में महिलाओं का साथ अक्सर पत्रकारों ने ही दिया है। पुरूषों के प्रभुत्व वाले काम और उद्योगों में महिलाओं के आने पर लेख भी लिखे गए हैं।

उपरोक्त उदाहरण से यह सवाल उठता है कि क्या यह महिलावादी समझ महज सतही है? जानकारों का कहना है कि पत्रकारिता में सेक्सिस्ट लेखों और तस्वीरों को मिसालें अब भी आम हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि संस्थान बड़ा है या छोटा या पत्रकार बड़े शहर में काम करता है या छोटे यह सोच अभी भी है। महिला की तारीफ एक जगह है और उसकी काबिलियत को कम ऑकना या सुंदरता के नाम पर दरकिनार कर देना दूसरी। कई लोग इसे बहुत महीन कहते हैं, पर एक बहुत साफ रेखा है, जो तारीफ की सीमाओं को बदतमीजी की हद में बदल देती है। फर्क नजरिए का है, रेखा के इस ओर या उस ओर। यह भी साफ है कि सफल कामकाजी पुरूषों के रूप-रंग पर ऐसी टिप्पणियॉ नही की जाती। शायद ही किसी लेख में उनके पहनावे को उनके कॅरियर से जोड़ा जाता हो। लबोलुआब यह है कि समाज की सोच को बदलने की जरूरत है।

चूँकि स्मिता सब्बरवाल देश के किसी मुख्यमंत्री कार्यालय में सचिव पद पर नियुक्त की जाने वाली पहिली महिला आफिसर थी, उनके मुताबिक पुरूषों के वर्चस्व वाले काम में अपने लिए जगह बनाना भी उनके खिलाफ उपरोक्त तंज भरे लेख के पीछे की वजह हो सकती है। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि मेरी यह उपलब्धि शायद कुछ पुरूषों को पसंद नही आई हो, पर पत्रिका को मेरे काम के बारे में जानकारी जुटाए बिना ऐसी बातों को जगह देना निंदनीय है। बताते हैं कि जेनेवा स्थित वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम के वार्षिक जेंड़र गैंप इंडेक्स के अनुसार, भारत 142 देशों की सूची में 13 स्थान से गिरकर 114वे नंबर पर पहुँच गया। बीते वर्ष वह 136 देशों की सूची में 101वे स्थान पर था। यह सर्वे स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक भागीदारी और राजनीतिक सहभागिता के मापदंड़ों पर महिलाओं की स्थिति को मापता है। भारत शिक्षा, आमदनी, श्रम बाजार में भागीदारी और बाल मृत्यु दर के मामले में इस सूची के अंतिम 20 देशों में शामिल है। पुरूषों और महिलाओं के बीच सबसे ज्यादा समानता नॉर्वे आईसलैंड, फिनलैंड, स्वीडन और डेनमार्क जैसे उत्तरी यूरोप के देशों में पाई गई है। अमेरिका में महिलाओं की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के प्रति दूषित नजरिया और भेदभाव वाला दृष्टिकोण निरक्षरता के अंधेरे में ही तेजी से पनपते हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि शिक्षा व्यवस्था का सुदृढ़ कर महिलाओं के प्रति लोगों की सोच का परिमार्जित किया जाए। निश्चित रूप से जब नजरिया बदलेगा तो नजारे भी बदले हुए दिखेंगे। कहा जाता है कि

'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि।'

●भीड़ हौसला तो देती हैं लेकिन पहचान छिन लेती है.

●जितने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं.

साहित्य और समाज

डॉ० सीताराम पाण्डेय,
मुज्जफरपुर, बिहार

भारतीय साहित्य, व्योम की तरह विस्तृत और गंगा के समान गौरवपूर्ण एवं गंभीर हैं, जिस-आत्मा में लोक-कल्याण की भव्य-भावनाएँ हिलोरें मारती रहती हैं। साहित्य का शाब्दिक अर्थ होता हैं-'हित-सहितम-साहित्यम्' अर्थात् जो मानव-जाति के लिए हितकर, सुखकर और श्रेयस्कर हो, उसे हम साहित्य की संज्ञा से विभूषित करते हैं।

मस्तिष्क को क्रियमान रखने तथा उसके विकास और वृद्धि में सहायता पहुँचाने के लिए साहित्य रूपी भोजन से मनुष्य का मानसिक परिपोषण होता हैं। जैसे-भौतिक शरीर की उन्नति पंचभूतों के कार्य-रूप-प्रकाश, वायु जलादि की उपयुक्तता पर निर्भर हैं वैसे ही मनुष्य का बनना-बिगड़ना साहित्य पर अवलम्बित हैं। अतः सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक विकास में साहित्य का प्रभूत योगदान है। किसी देश की संस्कृति और सभ्यता जानने के लिए वहाँ के साहित्य का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन आवश्यक हैं। साहित्य, देश, जाति व्यक्ति के विकास का बीज हैं। उसमें मानव-कल्याणार्थ धार्मिक, विचारों, सामाजिक-संगठन, ऐतिहासिक घटना तथा राजनीतिक परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब परिदृश्य हैं।

साहित्य से अधिक कल्याण और किसी कला से नहीं यही एक मात्र सहज आधार है, जिसमें व्यक्ति त्रिकालिक ज्ञान हासिल कर सकता हैं। भारतीय साहित्य में समाज पर प्रभाव ड़ालने की अद्भुत क्षमता होती हैं। उसमें ऐसी शक्ति समाहित हैं कि वह सीधे देश की जनता में जागृत का मंत्र फूँक दें। इस तरह हम देखते हैं कि मानवीय मूल्यों से मांड़ित साहित्य में बादशाह को पलट देने की अपरिमित शक्ति संगंफित हैं।

शास्त्रानुसार-साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात् पशु-पुंच्छ, विषाणहीनूः।
अर्थात् साहित्य-संगीत कला से विहीन व्यक्ति, सींग और पूंछ से हीन साक्षात पशु के समान होता हैं। यह तो सर्वविदित बात हैं कि मनुष्य पहले वन्य-जीवन व्यतीत करता था। कन्द-मूल-फल से उसकी क्षुधा निवृत्ति होती थी और निर्झर के नीर से उसकी प्यास शान्त होती थी। पर्वत की कन्दरायों एवं पेड़ो की छाया में वह रात्रि व्यतीत करता था। वर्षा, शीत और गर्मी से वह अपने को बचाने के लिए इनका ही आश्रय लेता था।

मानव को असभ्यता और अंधकार से सभ्यता और प्रकाश के पावन क्षेत्र में लाने का श्रेय साहित्य को ही हैं। समग्र मानव-समाज को सुसंस्कृत करने का एक-मात्र साधन साहित्य ही हैं। साहित्य भावना को व्यापक और विस्तृत बनाता हैं। वह विचारों की विभिन्नता दिखलाकर विचार करने की प्रेरणा प्रदान करता हैं और तदनुसार आचरण करने की शक्ति को संचारित करता हैं।

आदिकाल से आधुनिक काल तक मानव ने ज्ञान के दुर्गम क्षेत्र में व्याप्त आलोक की जितनी उपलब्धि की हैं, उसी को साहित्य की संज्ञा-भंड़ार को ही साहित्य कहा जाता हैं। यह सामाजिक कुरीतियों और पाखण्ड़ों का पर्दाफास करके सत् आचरण और उच्च्य विचारों का स्फुरण करता हैं। समाज के शुभ और अशुभ श्वेत और श्याम पक्षों का सम्यक उद्घाटन करके समाज को स्वस्थ और प्रगतिशील बनाता हैं। यथार्थ स्थिति के आधार पर आदर्श एवं अनुकरणीय परिस्थिति का सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत करके प्रगति का लक्ष्य-बिन्दु का विधान करता हैं। साहित्य समाज का दर्पण हैं। जिस प्रकार स्वच्छ दर्पण में मनुष्य को अपने शरीर का प्रतिबिंब सही रूप से प्रतिबिंम्बित होता हैं। यदि हमारे मुख मंड़ल पर कोई विशेष कान्ति हैं, तो वह स्पष्ट रूप से दर्पण में दिखालाई पड़ेगी। ठीक उसी प्रकार सामाजिक सद्गुण और दुर्गण तथा उसकी शक्ति साहित्य रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित होती हैं। साहित्य रूपी दर्पण में समाज के दुर्गण और विकृति भी अंकित हो जाते हैं।

हिन्दी साहित्य की ओर हम दृष्टि ड़ालते हैं तो देखते हैं कि एक हजार वर्ष पूर्व का हिन्दी साहित्य, वीर काव्यों से भरा-पड़ा हैं। कही सम्राट पृथ्वी राज की अमर-गाथा का गीत हैं, तो कहीं हम्मीर और विसलदेव की वीरता का विशद् ओजपूर्ण वर्णन हैं। वह वीर-रस का प्रवल-प्रवाह समाज के शौर्य-वीर्य की गति-विधी का ही प्रतिबिम्ब हैं, जो साहित्य रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित हो रहा हैं और लोक-जीवन के लिए प्रेरणा-स्त्रोत हैं।

एक ओर सूर सर्वशक्ति सम्पन्न ईश्वर के चरणों की बन्दना करते हैं तो दूसरी ओर तुलसी समग्र संसार को ''सिया-रामयम'' समझकर श्रद्धान्वत होते हैं। इस प्रकार हम अपने साहित्य में भक्ति-भावना का प्रवल-प्रवाह पाते हैं। हम देखते हैं कि साहित्य, समाज की परिवर्तित परिस्थिति, उसकी विचार-प्रणाली और भाव-दशा को सही रूप में अपने पारदर्शी हृदय में संजोकर रखता हैं। साहित्य केवल समाज का दर्पण ही नहीं, वह पथ-प्रदर्शक भी हैं। जब समाज की चेतना कुण्ठित हो जाती हैं और उसकी विवेक-शक्ति मुख मोड़ लेती हैं, तब ऐसे आड़े समय में साहित्य ही पथ प्रदर्शक हैं, जो अवरूद्ध प्रगति-पथ को आलोकित कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता हैं। जब समाज अपने अभियान के क्रम में पथ-भ्रष्ट हो जाता हैं तो साहित्य का पावन-प्रकाश खोए हुए मार्ग का पता बताता हैं। नव वधू की रूप माधुरी के सुधा-पान में आत्म-विस्मृत महाराजा जयसिंह को साहित्य की छोटी-सी दो पंक्तियों ने आत्म-जागरण का संदेश दिया।

जिस तरह जल के बिना नदी का अस्तित्व संभव नहीं हैं, सूर्य के बिना किरणों का कहीं स्थान नहीं, चन्द्रमा के बिना चॉदनी नहीं छिटक सकती? उसी तरह समाज के बिना साहित्य नहीं रह सकता और साहित्य के बिना समाज नहीं रह सकता। समाज एक चक्र हैं तो साहित्य उसकी धूरी। जिस तरह पृथ्वी अपने कक्ष पर घूमती है उसी तरह साहित्य, समाज रूपी कक्ष पर चक्कर काटती हैं।

साहित्य दो प्रकार हैं-उपयोगी साहित्य और ललित साहित्य। वे सभी उपयोगी साहित्य के अन्दर आते हैं, जिनका हमारे अन्तर्देश से रंचमात्र भी संबंध नहीं हैं, जो संसार के भिन्न-भिन्न तत्वों और तथ्यों का निरपेक्ष संकलन मात्र हैं। ललित साहित्य के अन्दर वह साहित्य आता हैं, जो हमारे हृदय में आलोकित होनेवाले भाव-धाराओं और भावना-तरंगों का रागात्मक रूप उपस्थित करता हैं, जिसमें भाव की प्रधानता होती हैं और जीवन के अन्य रूप उसकी पृष्ठभूमि में परिवर्द्धित होती हैं। उपयोगी साहित्य की श्रेणी में इतिहास शास्त्र, नागरिक शास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और विज्ञान की सभी शाखाऍ आती हैं। राजनीतिशास्त्र, इतिहास आदि की उपयोगिता तो सर्व विदित हैं। उपयोगी साहित्य की उपयोगिता तो साहित्य संज्ञा के पहले लगे उपयोगिता-विशेषण से ही व्यजिंत होता हैं। उसी प्रकार ललित साहित्य की कोटि में काव्य, उपन्यास, कथा, कहानी, नाटक आदि की गणना की जाती हैं।

वस्तुतः काव्व, उपन्यास आदि ललित साहित्य की सीमा की सामग्रियों के विषय में साधारण धारणा यह हैं कि ये सब केवल मनोरंजन और आत्मानन्द की वस्तुऍ हैं। इसमें जगत की ठोस धरती की वास्तविक विषम समस्याओं का न समावेश ही हैं और नहीं उनके समाधान का कोई मार्ग ही प्रदर्शित किया गया हैं। मानव के जीवन-संघर्ष के लिए इसके पास कोई समाधान और मार्ग-दर्शक प्रकाश का साधन नहीं हैं। लेकिन, यह भ्रान्ति पूर्ण धारणा हैं और इस धारणा में कोई ठोस तथ्य नहीं हैं। ललित साहित्य में लोक-जीवन की ठोस धरती की विषमताओं का प्रभावकारी, वास्तविक एवं मनोवैज्ञानिक चित्र हैं और उसके समाधान और विकास परिष्कार की प्रचुर सामग्री संचित रहती हैं। काव्य और उपन्यास आदि में हमारे अन्तर की भावभूमि पर जीवन की वास्तविकता अपनी समस्याओं और समाधनों के साथ गॉठ बॉधे प्रतिष्ठित परिलक्षित होती हैं। यहॉ मानव का मानस-हृदय की सहानुभूति की सरस-धारा में अवगाहन करता पारिष्कृति और विकसित होता हैं।

युग-युग की विभिन्नताऍ साहित्य

के दर्पण में प्रतिबिम्बिता होती हैं और अतीत और भविष्य-वर्तमान के पार्श्व-द्वय में विराजमान होकर व्यक्ति एवं समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर प्रगति में पूर्णता लान की ओर प्रेरित करती हैं। साहित्य-सर्जन का प्रेरक तत्व क्या हैं, इस विषय पर विभिन्न मनीषियों के विभिन्न मत हैं। जीवन की गति के क्रम को शब्दों में बॉधकर शाशवत रूप देने के प्रयास को ही साहित्य-सृष्टि का प्रेरक कारण माना जाता हैं।

''ग्रीक पंड़ित अरस्तू का मत हैं कि-''मानव की अनुकरण वृत्ति ही साहित्य का उद्गम स्थल हैं।'' क्रोंचे की दृष्टि में'' आत्माभिव्यंजन ही साहित्य-सृष्टि का मूल स्रोत हैं।'' कुछ विद्वानों का विचार हैं कि ''सौन्दर्य की अनुभूति और आनन्द का अतिरेक की व्यजंना ही साहित्य प्रणयन का मूल कारण हैं।'' एक कारण यह भी कहा जा सकता हैं कि ''मानव-जीवन की अपूर्णता को पर्णता की ओर ले जाने का प्रयास ही साहित्य-सर्जन का आधार बिन्दु हैं। ''फ्रायड़ के सिद्धान्त के अनुसार-''साहित्य प्रणयन के कारण शामित-वासनाओं की मानसिक तृष्टि ही हैं। साहित्य के उद्गम, विकास और प्रसार का कारण या रूप जो हो, इतना तो निश्चित ही है कि यह मानव-जाति की अनुपम शाक्ति और जीवन-दाता हैं। यह स्वर्गीय सुधा-कलश हैं, जो जीवन के समग्र रूप को सदा हरा भरा रखता हैं। जीवन-लता को सूखने का अवसर आते ही अपने हृदय की अमिय-धार उड़ेल कर अमरत्व की ओर अग्रसर करता हैं। साहित्य स्वर्गीय विभूति हैं, जिसमें सारी धरती के अधिवासियों के कल्याण की शक्ति निहित हैं। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकसित कर समाज के गठन और प्रगति का विधान रचता हैं। जीवन-पथ पर भूला-भटका मानव साहित्य के पुनीत प्रकाश से सही मार्ग पा जाता हैं और उस राह पर तीव्र गति से गन्तव्य स्थल की ओर अग्रसर होता हैं। व्यक्तिगत जीवन में भी जब कभी विषम परिस्थितियो उलझनें बडती हैं तो साहित्य की सहायता मुक्ति का अभिनव मार्ग प्रस्तुत करती हैं।

साहित्य राष्ट्र का धरोहर हैं। कोई भी राष्ट्र इसकी उपेक्षा करके प्रगति नहीं कर सकता। किसी देश का साहित्य ही उसके समाज, उसकी सभ्यता एवं सांस्कृतिक उपलब्धियॉ का लिखित दस्तावेज होता हैं। चूँकि साहित्य में सहित का भाव हैं। सबकुछ खोकर भी अपनी जाति की तस्वीर साहित्य में देख सकते हैं। बिना साहित्यिक साक्षात्कार के हम समुद्र, नदी, पर्वत, वन, उपवन, चन्द्र -सूर्यादि पदार्थो का आन्तरिक सौष्ठव नहीं देख सकते। फूल को जितना साहित्यकार समझाता हैं। उतना शायद भौरा भी नहीं समझाता होगा।

साहित्य के बिना हम प्राकृतिक सुषमाओं के रस लेने में असमर्थ हो जाते हैं। कमनीय कामिनी-कटाक्ष और स्मितियुक्त भू-भंगिमा, शिशु की मन्द-मुस्कान, माननि का मान, कृषक किशोरी का गान, रसलम्पट भ्रमरों का मधुपान शरत् पूर्णिमा का धवल -विमल हास-विलास, तरंगित जीवन का मदोच्छ्वास, सुरभि-सुमनों का विकास, साहित्य के बिना अपनी अर्थबत्ता को खो बैठते हैं। साहित्य की तेजस्विता हमारे निष्प्राण जीवन में बिजली की शक्ति-संचालित कर कल्याण करती हैं। आज भी हम साहित्य में एक ओर राम के धनुष का टंकार सुनते हैं तो दूसरी ओर अर्जुन के गांण्ड़ीव घोष भीं। एक ओर भीम के प्रचण्ड़ भुजदण्ड़ों का गर्जन सुनते हैं तो दूसरी ओर मुरली मनोहर का मधुर मुरलीवाद। साहित्य के शब्दार्थमय शरीर में त्रिलोक और त्रिकाल की सारी स्थूल, सूक्ष्म, यथार्थ-कल्पित, विभूतियों के दर्शन होते हैं। जहॉ रवि नहीं जा सकता, वहॉ साहित्कार की पैनी दृष्टि चली जाती हैं। साहित्य की सुरभि समाज के पारस्परिक द्वेष की दुर्गन्धि को दूर कर देती हैं।

साहित्य में वह अद्भुत शाक्ति हैं जो अतीत को वर्तमान को भविष्य बना सकता हैं। वह कॉच को कंचन कर सकता हैं। अदृश्य को दृश्यमान करना उसकी सहज प्रवृत्ति हैं। साहित्य की तेजस्विता हमारी निष्प्राण नसों में बिजली भरती हैं। उसी का संदेश हमें स्वतंत्र और जाग्रत होने के लिए प्रेरित करता हैं। यदि साहित्य हमारे जीवन-व्यापार के साथ नहीं चलेगा। तो अपने पूर्वजों से संबंध टूट जाएगा। भारतीय समाज जब

शेष पृष्ठ 34 **पर..**

गणेश जी के वाहन मूषक की महत्ता

भारतीय संस्कृति में देवताओं में श्री गणेश का सर्वोच्च स्थान है। गणेश जी भारतीयों के सर्व पूज्य देवता है वेद, पुराण और स्मृतियों में उनका उल्लेख मनोकामना पूरी करने वाले देवता के रूप में हुआ है। उपनिषद में गणेश जी को एकदंत, वक्रतुंडाय, रक्तवर्ण, लंबोदर और विघ्नविनाशक के रूप में उपस्थित किया गया है। विघ्नविनाशक रूप की कल्पना अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन देवताओं के वाहनों का जिन लोगों को सही जानकारी नहीं होती है वे अक्सर कहते हैं कि दीर्घकाय गजानन जी के लिए वाहन छोटा-सा जंतु मूषक का होना उचित नहीं लगता है?

आजकल की पीढ़ी को ऊहापोह भरे जीवन में वेद-पुराण के अध्ययन करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है। उनके मन की शंका को दूर करने तथा आमजन तक श्री गणेश जी के वाहन चूहे की महत्ता को पहुंचाना जरूरी है। ताकि हमारी नई पीढ़ी इन देवताओं के वाहनों की महत्ता को समझ सके और हिंदू धर्म की प्रगाढ़ता में अपना योगदान दे सकें।

कहा जाता है कि गणेश जी के वाहन के लिए ईश्वर ने ही चूहे को नियत किया है। 'आखुस्ते पशुः'। अर्थात हे गणेश आपका वाहन मूषक नियत करता हूं। इसका रहस्य यह है कि मनुष्य के मन में सदा अनेक प्रकार के तर्क-वितर्क एवं कुतर्क उठा करते हैं। जिस प्रकार गौमाता सद्गुणों का प्रतीक है, सिंह रजोगुण का प्रतीक है, और सर्प तमोगुण का प्रतीक है,

उसी प्रकार चूहा भी तर्क का प्रतीक है। निष्प्रयोजन अच्छी से अच्छी और कठोर से कठोर वस्तुओं को कुतर डालना चूहे का स्वाभाविक गुण है। गणेश जी के उपासकों के कार्यों में उपस्थित विघ्नबाधाओं को काट छांट कर दूर कर देना गणेश जी के वाहन चूहे का प्रधान कार्य है। इसलिए मानव का कर्तव्य है कि अपने कुतर्कों को स्वतंत्र विचरण न करने दें। जिस प्रकार वाहन चालक वाहन को अपने वश में रखकर अपनी इच्छा अनुसार गन्तव्य मार्ग की ओर चलाता रहता है, उसी प्रकार मानव को भी अपनी तर्कप्रणाली को अव्यवस्थित न बनने देकर, वेद और शास्त्रों में निर्दिष्ट कर्म मार्गों में ही लगाया रखना आवश्यक है और यही लोक कल्याण के लिए हितकर भी है।

सामान्यतः देखा जाए तो कृषि प्रधान देश भारत में लोकव्यवहार से भी चूहे को विघ्नविनाशक गणेश जी का वाहन मानना उचित प्रतीत होता है।

-डा० बालाराम परमार'हंसमुख'

लोकव्यवहार में चूहे संपन्न घरों के प्रतीक माने जाते हैं। जब तक घरों और खेत खलिहानों में भरपूर अनाज होता है तब तक चूहे आनंद से विचरण करते रहते हैं और जब अनाज का अभाव होने लगता है तो चूहे या तो वहां से पलायन करते हैं अथवा मरने लग जाते हैं। प्लैग जैसी महामारी के फैलने का कारण भी बड़ी संख्या में चूहों का मरना ही माना जाता है।

गणेश पुराण में गणेश जी के वाहन 'चूहे' को सभी प्राणियों के हृदयरूपी बिल में रहने वाला अंतर्यामी भगवान का प्रतीक माना गया है और सभी प्राणियों के भोगों को भोगने वाला चोर माना गया है। चूहा मनुष्य के दैनिक जीवन में उपयोग लाई जाने वाली छुपी वस्तुओं को चुराकर खा लेने के बाद भी पुण्य और पाप से रहित होता है। छुपी हुई वस्तु को ढूंढ कर खाने के कारण चूहे को अंतर्यामी की पदवी भी दी गई है और शायद यही कारण है यह अंतर्यामी, गणेश जी की सेवा के लिए चूहा का रूप धारण कर वाहन बना है।

लंबोदर होने के कारण समस्त प्रपंच गणेश जी के उदर में प्रतिष्ठित है और उससे ही उत्पन्न होती है शरीर के लिए आवश्यक ऊर्जा और इसी ऊर्जा से हमारा स्वस्थ और सुंदर दैनिक जीवन संचालित हैं। गणेश जी के कान सुपडे के समान है अर्थात

शेष पृष्ठ 26-....

दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है : संस्कृत भाषा

आइये जानें संस्कृत भाषा का महत्वः संस्कृत भाषा के विभिन्न स्वरों एवं व्यंजनों के विशिष्ट उच्चारण स्थान होने के साथ प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन का उच्चारण व्यक्ति के सात ऊर्जा चक्रों में से एक या एक से अधिक चक्रों को निम्न प्रकार से प्रभावित करके उन्हें क्रियाशील-उर्जीकृत करता है :- मूलाधार चक्र-स्वर 'अ' एवं क वर्ग का उच्चारण मूलाधार चक्र पर प्रभाव डाल कर उसे क्रियाशील एवं सक्रिय करता है. स्वर 'इ' तथा च वर्ग का उच्चारण स्वाधिष्ठान चक्र को उर्जीकृत करता है.

स्वर 'ऋ' तथा ट वर्ग का उच्चारण मणिपूरक चक्र को सक्रिय एवं उर्जीकृत करता है.

स्वर 'लृ' तथा त वर्ग का उच्चारण अनाहत चक्र को प्रभावित करके उसे उर्जीकृत एवं सक्रिय करता है.

स्वर 'उ' तथा प वर्ग का उच्चारण विशुद्धि चक्र को प्रभावित करके उसे सक्रिय करता है.

ईषत् स्पष्ट वर्ग का उच्चारण मुख्य रूप से आज्ञा चक्र एवं अन्य चक्रों को सक्रियता प्रदान करता है. ईषत् विवृत वर्ग का उच्चारण मुख्य रूप से सहस्त्राधार चक्र एवं अन्य चक्रों को सक्रिय करता है. इस प्रकार देवनागरी लिपि के प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन का उच्चारण व्यक्ति के किसी न किसी उर्जा चक्र को सक्रिय करके व्यक्ति की चेतना के स्तर में अभिवृद्धि करता है. वस्तुतः संस्कृत भाषा का प्रत्येक शब्द इस प्रकार से संरचित किया गया है कि उसके स्वर एवं व्यंजनों के मिश्रण का उच्चारण करने पर वह हमारे विशिष्ट ऊर्जा चक्रों को प्रभावित करे. प्रत्येक शब्द स्वर एवं व्यंजनों की विशिष्ट संरचना है जिसका प्रभाव व्यक्ति की चेतना पर स्पष्ट परिलक्षित होता है.

इसीलिये कहा गया है कि व्यक्ति को शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ बहुत सोच-समझ कर बोलना चाहिए. शब्दों में शक्ति होती है जिसका दुरूपयोग एवं सदुपयोग स्वयं पर एवं दूसरे पर प्रभाव डालता है. शब्दों के प्रयोग से ही व्यक्ति का स्वभाव, आचरण, व्यवहार एवं व्यक्तित्व निर्धारित होता है.

उदाहरणार्थ जब 'राम' शब्द का उच्चारण किया जाता है तो हमारा अनाहत चक्र जिसे हृदय चक्र भी कहते है सक्रिय होकर उर्जीकृत होता है. 'कृष्ण' का उच्चारण मणिपूरक चक्र-नाभि चक्र को सक्रिय करता है. 'सोह्म' का उच्चारण दोनों 'अनाहत' एवं 'मणिपूरक' चक्रों को सक्रिय करता है.

वैदिक मंत्रो को हमारे मनीषियों ने इसी आधार पर विकसित किया है. प्रत्येक मन्त्र स्वर एवं व्यंजनों की एक विशिष्ट संरचना है. इनका निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार शुद्ध उच्चारण ऊर्जा चक्रों को सक्रिय करने के साथ साथ मष्तिष्क की चेतना को उच्चीकृत करता है. उच्चीकृत चेतना के साथ व्यक्ति विशिष्टता प्राप्त कर लेता है और उसका कहा हुआ अटल होने के साथ-साथ अवश्यम्भावी होता है. शायद आशीर्वाद एवं श्राप देने का आधार भी यही है. संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता एवं सार्थकता इस तरह स्वयं सिद्ध है.

भारतीय शास्त्रीय संगीत के सातों स्वर हमारे शरीर के सातों उर्जा चक्रों से जुड़े हुए हैं. प्रत्येक का उच्चारण सम्बंधित उर्जा चक्र को क्रियाशील करता है. शास्त्रीय राग इस प्रकार से विकसित किये गए हैं जिससे उनका उच्चारण/गायन विशिष्ट उर्जा चक्रों को सक्रिय करके चेतना के स्तर को उच्चीकृत करे. प्रत्येक राग मनुष्य की चेतना को विशिष्ट प्रकार से उच्चीकृत करने का सूत्र है. इनका सही अभ्यास व्यक्ति को असीमित ऊर्जावान बना देता है.

संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है इसीलिए इसका नाम संस्कृत है. संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनी, महर्षि कात्यायन और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं. इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है. यही इस भाषा का

रहस्य है. जिस प्रकार साधारण पकी हुई दाल को शुद्ध घी में जीराय मैथीय लहसुनय और हींग का तड़का लगाया जाता है, तो उसे संस्कारित दाल कहते हैं.

घी; जीराय लहसुन, मैथी; हींग आदि सभी महत्वपूर्ण औषधियाँ हैं. ये शरीर के तमाम विकारों को दूर करके पाचन संस्थान को दुरुस्त करती है. दाल खाने वाले व्यक्ति को यह पता ही नहीं चलता कि वह कोई कटु औषधि भी खा रहा है; और अनायास ही आनन्द के साथ दाल खाते-खाते इन औषधियों का लाभ ले लेता है. ठीक यही बात संस्कारित भाषा संस्कृत के साथ सटीक बैठती है. जो भेद साधारण दाल और संस्कारित दाल में होता है; वैसा ही भेद अन्य भाषाओं और संस्कृत भाषा के बीच है.

संस्कृत भाषा में वे औषधीय तत्व क्या हैं? : यह विश्व की तमाम भाषााओं से संस्कृत भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है. चार महत्वपूर्ण विशेषताएँ :- १-अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः): संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण और लाभदायक व्यवस्था है, अनुस्वार और विसर्ग. पुल्लिंग के अधिकांश शब्द विसर्गान्त होते हैं- यथा-रामः बालकः हरिः भानुः आदि. नपुंसक लिंग के अधिकांश शब्द अनुस्वारान्त होते हैं-यथा- जलं वनं फलं पुष्पं आदि. विसर्ग का उच्चारण और कपालभाति प्राणायाम दोनों में श्वास को बाहर फेंका जाता है. अर्थात् जितनी बार विसर्ग का उच्चारण करेंगे उतनी बार कपालभाति प्राणायाम अनायास ही हो जाता है. जो लाभ कपालभाति प्राणायाम से होते हैं, वे केवल संस्कृत के विसर्ग उच्चारण से प्राप्त हो जाते हैं.

उसी प्रकार अनुस्वार का उच्चारण और भ्रामरी प्राणायाम एक ही क्रिया है. भ्रामरी प्राणायाम में ष्वास को नासिका के द्वारा छोड़ते हुए भवरे की तरह गुंजन करना होता है और अनुस्वार के उच्चारण में भी यही क्रिया होती है. अतः जितनी बार अनुस्वार का उच्चारण होगा, उतनी बार भ्रामरी प्राणायाम स्वतः हो जायेगा. जैसे हिन्दी का एक वाक्य लें- 'राम फल खाता है' इसको संस्कृत में बोला जायेगा- 'रामः फलं खादति' = राम फल खाता है, यह कहने से काम तो चल जायेगा, किन्तु रामः फलं खादति कहने से अनुस्वार और विसर्ग रूपी दो प्राणायाम हो रहे हैं. यही संस्कृत भाषा का रहस्य है. संस्कृत भाषा में एक भी वाक्य ऐसा नहीं होता जिसमें अनुस्वार और विसर्ग न हों. अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत बोलना अर्थात् चलते फिरते योग साधना करना होता है.

२.शब्द-रूपः-संस्कृत की दूसरी विशेषता है शब्द रूप. विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक ही रूप होता है, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 25 रूप होते हैं. जैसे राम शब्द के निम्नानुसार 25 रूप बनते हैं-यथाः रम् (मूल धातु)-रामः रामौ रामास्र्यरामं रामौ रामान् यरामेण रामाभ्यां रामैः य रामाय रामाभ्यां रामेभ्यः यरामात् रामाभ्यां रामेभ्यः य रामस्य रामयोः रामाणांय रामे रामयोः रामेशु यहे राम! हे रामौ! हे रामाः। ये 25 रूप सांख्य दर्शन के 25 तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

जिस प्रकार पच्चीस तत्वों के ज्ञान से समस्त सृष्टि का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वैसे ही संस्कृत के पच्चीस रूपों का प्रयोग करने से आत्म साक्षात्कार हो जाता है और इन 25 तत्वों की शक्तियाँ संस्कृतज्ञ को प्राप्त होने लगती है. सांख्य दर्शन के 25 तत्व निम्नानुसार हैं-आत्मा (पुरुष), (अंतःकरण-4) मन बुद्धि चित्त अहंकार, (ज्ञानेन्द्रियाँ-5) नासिका जिह्वा नेत्र त्वचा कर्ण, (कर्मेन्द्रियाँ 5) पाद हस्त उपस्थ पायु वाक्, (तन्मात्रायें 5) गन्ध रस रूप स्पर्श शब्द,(महाभूत 5) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश.

३.द्विवचनः- संस्कृत भाषा की तीसरी विशेषता है द्विवचन. सभी भाषाओं में एक वचन और बहुवचन होते हैं जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है.

इस द्विवचन पर ध्यान दें तो पायेंगे कि यह द्विवचन बहुत ही उपयोगी और लाभप्रद है. जैसे - राम शब्द के द्विवचन में निम्न रूप बनते हैं- रामौ, रामाभ्यां और रामयोः। इन तीनों शब्दों के उच्चारण करने से योग के क्रमशः मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध और जालन्धर बन्ध लगते हैं, जो योग की बहुत ही महत्वपूर्ण क्रियायें हैं.

४. सन्धिः- संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि. संस्कृत में जब दो शब्द पास में आते हैं तो

वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है. उस बदले हुए उच्चारण में जिह्वा आदि को कुछ विशेष प्रयत्न करना पड़ता है. ऐसे सभी प्रयत्न एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति के प्रयोग हैं. 'इति अहं जानामि' इस वाक्य को चार प्रकार से बोला जा सकता है, और हर प्रकार के उच्चारण में वाक् इन्द्रिय को विशेष प्रयत्न करना होता है.

यथाः 1-इत्यहं जानामि। 2- अहमिति जानामि। 3-जानाम्यहमिति। 4- जानामीत्यहम्।

इन सभी उच्चारणों में विशेष आभ्यंतर प्रयत्न होने से एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति का सीधा प्रयोग अनायास ही हो जाता है. जिसके फलस्वरूप मन बुद्धि सहित समस्त शरीर पूर्ण स्वस्थ एवं निरोग हो जाता है. इन समस्त तथ्यों से सिद्ध होता है कि संस्कृत भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान की भाषा ही नहीं, अपितु मनुष्य के सम्पूर्ण विकास की कुंजी है. यह वह भाषा है, जिसके उच्चारण करने मात्र से व्यक्ति का कल्याण हो सकता है. इसीलिए इसे रुदेवभाषा और अमृतवाणी कहते हैं. संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यंत परिमार्जित एवं वैज्ञानिक है. संस्कृत के एक वैज्ञानिक भाषा होने का पता उसके किसी वस्तु को संबोध ान करने वाले शब्दों से भी पता चलता है. इसका हर शब्द उस वस्तु के बारे में, जिसका नाम रखा गया है, के सामान्य लक्षण और गुण को प्रकट करता है. ऐसा अन्य भाषाओं में बहुत कम है. पदार्थों के नामकरण ऋषियों ने वेदों से किया है और वेदों में यौगिक शब्द हैं और हर शब्द गुण आधारित हैं. इस कारण संस्कृत में वस्तुओं के नाम उसका गुण आदि प्रकट करते हैं. जैसे हृदय शब्द. हृदय को अंग्रेजी में हार्ट कहते हैं और संस्कृत में हृदय कहते हैं. अंग्रेजी वाला शब्द इसके लक्षण प्रकट नहीं कर रहा, लेकिन संस्कृत शब्द इसके लक्षण को प्रकट कर इसे परिभाषित करता है. बृहदारण्यकोपनिषद 5.3.1 में हृदय शब्द का अक्षरार्थ इस प्रकार किया है- तदेतत् र्त्यक्षर हृदयमिति, हृ इत्येकमक्षरमभिहरित, द इत्येकमक्षर ददाति, य इत्येकमक्षरमिति। अर्थात् हृदय शब्द हृ, हरणे द दाने तथा इण् गतौ इन तीन धातुओं से निष्पन्न होता है. हृ से हरित अर्थात् शिराओं से अशुद्ध रक्त लेता है, द से ददाति अर्थात् शुद्ध करने के लिए फेफड़ों को देता है और य से याति अर्थात सारे शरीर में रक्त को गति प्रदान करता है. इस सिद्धांत की खोज हार्वे ने 1922 में की थी, जिसे हृदय शब्द स्वयं लाखों वर्षों से उजागर कर रहा था. संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के कई तरह से शब्द रूप बनाए जाते हैं, जो उन्हें व्याकरणीय अर्थ प्रदान करते हैं.

अधिकांश शब्द-रूप मूल शब्द के अंत में प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं. इस तरह यह कहा जा सकता है कि संस्कृत एक बहिर्मुखी- अंतः श्लिष्टयोगात्मक भाषा है. संस्कृत के व्याकरण को महापुरुषों ने वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया है.

संस्कृत भारत की कई लिपियों में लिखी जाती रही है, लेकिन आधुनिक युग में देवनागरी लिपि के साथ इसका विशेष संबंध है. देवनागरी लिपि वास्तव में संस्कृत के लिए ही बनी है! इसलिए इसमें हरेक चिन्ह के लिए एक और केवल एक ही ध्वनि है. देवनागरी में 13 स्वर और 34 व्यंजन हैं. संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं, बल्कि संस्कारित भाषा भी है, अतः इसका नाम संस्कृत है. केवल संस्कृत ही एकमात्र भाषा है, जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नहीं किया गया है. संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद नहीं, बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योगशास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं.

विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का प्रायः एक ही रूप होता है, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 27 रूप होते हैं. सभी भाषाओं में एकवचन और बहुवचन होते हैं, जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है. संस्कृत भाषा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है संधि. संस्कृत में जब दो अक्षर निकट आते हैं, तो वहाँ संधि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है. इसे शोध में कम्प्यूटर अर्थात् कृत्रिम बुद्धि के लिए सबसे उपयुक्त भाषा सिद्ध हुई है और यह भी पाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है. संस्कृत ही एक मात्र साधन है, जो क्रमशः अंगुलियों एवं जीभ को

शेष पृष्ठ 22 पर....

सर्दियों में स्वस्थ रहने के खास सुझाव

एंटीबायोटिक-एंटीबैक्ट्रीयल मसाले हर्बलः सर्दी मौसम में अदरक, लहसुन, लौंग, इलायची, दालचीनी, तुलसी, पुदीना, मसालों का सेवन उत्तम है. जैसे अदरक तुलसी चाय, सूप पीना, किंचन में खाने में मसालों का इस्तेमाल करना बदले मौसम में सर्दी, जुकाम, बुखार, संक्रमण, पाचनतंत्र गड़बड़ी, ठंड लगने से दूर रखने में सक्षम है. मसाले हर्बल सेवन रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का अच्छा सुरक्षित माध्यम है.

आंवला–सर्दियों में आंवला, शहद, आंवला कैंडी खाना स्वस्थ निरोग स्वास्थ्य की पहचान है. आंवला शहद् पाचन तंत्र को दुरूस्त रखने, त्वचा से सम्बन्धित विकारों दूर रखने, बालों जड़ से मजबूत, पोषण संचार और किड़नी, फेफड़े, हृदय को स्वस्थ रोगमुक्त रखने सहायक है. आंवला शहद सर्दियों में खास रक्षा कवच बनाने में सक्षम है।

पत्तेदार हरी सब्जियांः पालक, सरसों, राई, लहसुन पत्तियां, हरी सब्जियां सर्दियों में सेहत को स्वस्थ निरोग रखने में सक्षम है. हरी सब्जियां पाचन तंत्र से लेकर नजर विकार और आंतरिक शारीरिक विकारों से दूर रखने में सक्षम है.

फलों का रस/सूखे फलः सर्दियों में गाजर, अनार, मौसमी, सन्तरा, चुकन्दर, अन्नास आदि का रस सेवन करना फायदेमंद है. सर्दी मौसम में अखरोट, काजू, बादाम, छुआरे, मूंगफली, किशमिश, मेवा इत्यादि डाईफ्रूटस खाना फायदेमंद है.

गले को संक्रामण से बचायेंः सर्दी मौसम में खानपान पर खास ध्यान देना जरूरी है. तली भुनी चीजों, जंक फूड, सोड़ा पेय, आईसक्रीम, ठंड़ा पानी सेवन से परहेज करें. तली भुनी चीजों, जंकफूड, सोडा ठंड़ा पेय, आईसक्रीम, ठंड़ा पानी सेवन से सर्दी-जुकाम संक्रामण वायरल फैलने का भय ज्यादा बना रहता है.

शरीर फिटनेसः सर्दी मौसम में व्यक्ति थोड़ा आलस्य हो जाता है. सर्दी में मोटापा, चर्बी बढ़ने से बचाने के लिए और शरीर को फिट रखने के लिए रोज सैर, योगा, व्यायाम जरूरी हो जाता है।.

सीमित मात्रा में पोटिक आहारः सर्दी मौसम में खाना आसानी से पच जाता है. परन्तु ज्यादा तैलीय, प्रोटीन वाले खाद्य पदार्थों से मोटापा, वजन, अपचन, गैस, एसिडिटी का भय बना रहता है. पोष्टिक संतुलित आहार सीमित मात्रा में खायें, गुनगुना पानी पीयें.

गर्म सर्दी रोधक कपड़े पोषाकः सर्दी मौसम में शरीर को पूर्णरूप से ठंड़ी हवा, संक्रमण, वायरल से बचाने में गर्म ऊनी कपड़ों सही पूर्ण पोषाक का खास स्थान है. बच्चे बड़ों सभी को ठंड़ी हवा सर्दी लगने से बचाने जरूरी है.

सर्दी, जुकाम, खांसी उपचारः सर्दी जुकाम कोई गम्भीर बीमारी नहीं है. सर्दी जुकाम का प्रकोप लगभग 8–10 दिनों तक रहता है. सर्दी जुकाम लम्बे समय तक रहने से साइनस, टी.बी., अस्थमा, कफ जमना, एलर्जी, निमोनिया बिगड़ना, फेफड़ों में विकार जैसे समस्याऐं होने का भय बना रहता है. सर्दी जुकाम नजला खांसी ठीक करने में एंटीबायोटिक, एंटीबायरल, एंटीबैक्टीरल, गुणों वाली चीजें खाने और दवाईयां, काढ़ा तरल पदार्थ सेवन करना फायदेमंद है।

सर्दी जुकाम होने के कारणः संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आना, सर्द हवा, शरीर में रोगप्रतिरोधक क्षमता घटना, बाहर से आने पर ठंडा पानी पीना, ठंडी चीजों का

शेष पृष्ठ 22 पर....

सोचनीय सबहीं बिधी सोई

भक्ति का सम्बन्ध वाह्य क्रियाकलापों के पूर्व मनोवृत्ति से हैं। मनोवृत्तियों में परिवर्तन के साथ मानवता को मन, वाणी और कर्म में आत्मसात् करना भक्ति का यथार्थ रूप हैं।

-कैलाश त्रिपाठी
अजीतमल, औरैया, उ०प्र०

भक्ति, दर्शन, मानवता एवं सद्ज्ञानादियुक्त 'रामचरितमानस' सार्वकालिका एवं सार्वजनीय ग्रन्थ हैं। भक्ति के आश्रय से श्रेय की प्राप्ति सहज एवं सुगम होने की तुलसी की मान्यता 'मानस' में स्पष्ट हैं। परन्तु भक्ति की औपचारिकता सर्वाधिक 'सोचनीय' हैं। जबकि आधुनिक परिवेश में भक्ति भी औपचारिक दृष्टिगत होती हैं। सेवा के अर्थ में प्रयुक्त 'भजू' धातु में किन प्रत्यय के योग से बने भक्ति शब्द में सेवा से सम्बद्ध श्रद्धा, विश्वास, प्रेम एवं समर्पणादि भाव किसी न किसी रूप में व्याप्त हैं। शंकराचार्य के मतानुसार प्रत्येक प्राणी में श्री भगवान विराजमान हैं। अतः उन सर्वात्मा में रति होना ही भगवान की भक्ति हैं। साधना की दृष्टि से भक्ति दो प्रकार की मानी गयी हैं- वैधी तथा रागानुगा अथवा साधन रूप और साध्य रूप।

भक्ति का सम्बन्ध वाह्य क्रियाकलापों के पूर्व मनोवृत्ति से हैं। मनोवृत्तियों में परिवर्तन के साथ मानवता को मन, वाणी और कर्म में आत्मसात् करना भक्ति का यथार्थ रूप हैं। समय के प्रभाव से धीरे-धीरे भक्ति में औचारिकता का समावेश होता गया, जिससे उसका वास्तविक अर्थात् अनौपचारिक स्वरूप लुप्त हो गया और औपचारिक स्वरूप सर्वत्र व्याप्त हो गया। जीवन में भक्ति के प्रभाव से व्यावहारिक परिवर्तन परिलक्षित न होने पर भक्ति में औपचारिकता का आभास मिलता हैं। आज सामूहिक सत्संग सामाजिक धार्मिक आयोजन -यज्ञ, श्रीमद्भागवत कथा, अखण्ड़ पाठ मानस-सम्मेलनादि ही नही व्यक्तिगत पूजा-अर्चना व्रत दान एवं तीर्थादि भी औपचारिक होते जा रहे हैं। भक्ति की बारीकियों को ठीक से समझे बिना हम औपचारिक पूजा-अर्चना, व्रत एवं तीर्थादि को ही भक्ति मानने लगे। हम भ्रमित हैं। बस यही भूल हो गई, जिससे हमारी भक्ति औपचारिक होती गई। सन्त मलूकदास जी कहते हैं-

सुमिरन ऐसा कीजिए, दूजा लखै न कोय।/ओठ न फटकत देखिये, प्रेम राखिये गोय।।

भक्ति में प्रविष्ट औपचारिकता की ओर सूरदास जी का भी ध्यान गया हैं। वे कहते हैं-जाकौं काम-क्रोध नित ब्यापै। अरू पुनि लोभ सदा संतापैं। /ताहि असाधु कहत सब लोई। साधु वेष धरि साधु न होई।।

भगवान बुद्ध ने भी इसी औपचारिकता के प्रति हमें सचेत किया हैं। यहॉ कबीर ने नाम-जप की औपचारिकता का विरोध किया है। न कि नाम-जप का। देखे- कबिरा सब जग निरधना धनवन्ता नहिं कोय।/ धनवन्ता सोइ जानिये जाके राम नाम धन होय।। नाम जपन्ता कुष्टी भला चुइ-चुइ परे जो चाम।/ कंचन देह किस काम का जो मुख नाही राम।।

यहॉ कबीर का आशय औपचारिक पूजा की अपेक्षा कर्मोपासना अर्थात् स्वकर्तव्य के प्रति निष्ठावान होते हुये भगवतोपासना से हैं। वे सगुण -साकारोपासना के विरोधी न होकर उसमें समाविष्ट औपचारिकता के विरोधी और अनौपचारिकता के समर्थक थे।

वैचारिक और मनोवृत्तिगत बदलाव के बिना भक्ति का क्रियात्मक रूप भक्ति की औपचारिकता दर्शाता है। माँ का अपने पुत्र से स्वल्पाहार या भोजन के लिए कहना, स्वास्थ्य एवं शारिरिक पीड़ा आदि के विषय में पूछना प्रायः अनौपचारिक होता है। जबकि हमारे द्वारा अतिथियो तथा आगन्तुको से भोजनादि का आग्रह या उनकी पीड़ा आदि के विषय में पूछना सम्बन्धों की निकटस्थता तथा दूरस्थता पर परिस्थितिजन्य

औपचारिक भी हो सकता है और अनौपचारिक भी हो सकता है। स्पष्ट है कि हमारे अन्याय कार्य पारिवारिक समाजिक परम्पराओं एवं लोकाचारादि के कारण औपचारिक तो हो सकते हैं परन्तु उन्हें पाखण्ड़ की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसी प्रकार गृहस्थ परिवारों में वर्तमान में होने वाले यज्ञोपवीत, विवाहादि संस्कार अथवा जन्मदिन आदि विभित्र अवसरों पर आयोजित सत्यनारायण व्रत कथा, मानस पाठ आदि को हम औपचारिक या औपचारिकता लिये हुए कह सकते हैं, पाखण्ड़ नहीं। तुलसी की भक्ति विशुद्ध अनौपचारिकता के प्रति सतत जागरूक एवं चिन्तित दिखाई देते हैं। इस सन्दर्भ में प्रथमतः तुलसी की नवधा भक्ति पर ध्यान अपेक्षित हैं। वे लिखते हैं-प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।/ गुरू पद पंकज सेवा तीसरी भगति अमान।

भक्ति औपचारिक होकर न रह जाय इसीलिये गोस्वामी जी ने 'मानस' की नवधा भक्ति को सुविचारित रूप से अनौपचारिकता से सम्बद्ध किया हैं। सत्संग, कथा श्रवण, गुरूसेवा एवं भगवान् के गुणों का गान ये सभी औपचारिक एवं औपचारिकता लिये हुये भी हो सकते हैं, जैसा कि आज देखा जा रहा हैं। भक्ति की अनौपचारिकता को दृष्टिगत रखते हुये तुलसी ने गुरू पद पंकज सेवा के साथ अमानत जोड़ दी। अमानता औपचारिकता होगी अथवा होगी ही नहीं। मंत्र जाप के साथ दृढ़ विश्वास एवं भजन शब्द जोड़ने का भी आशय अनौपचारिक मंत्र-जाप से हैं। विश्वास तथा सेवा एंव समपर्णादि के भाव में प्रयुक्त भज धातु के भजन शब्द में अनौपचारिकता सन्निहित हैं। कपट त्यागकर भगवान् के गुणों का गान करने का आशय भी कीर्तन की अनौपचारिकता सुनिश्चित करना रहा हैं। 'मानस' की नवधा भक्ति की छठवीं, सातवीं, आठवीं एवं नवमी भक्ति अर्थात् दम, शील, समता, सरलता, सन्तोष, परदोष दर्शन का अभाव एवं भगवान पर विश्वास आदि के आते ही सत्संग कथा-श्रवण, गुरू पद सेवा, मंत्र जाप एंव कीर्तन जो कि औपचारिक भी हो सकते हैं, स्वतः अनौपचारिक हो जायेंगे। भक्ति की यह अनौपचारिकता की इन्हीं सम्भावनाओं को दृष्टिगत करते हुये तलसीदास जी ने 'मानस' की नवद्या भक्ति को अनौपचारिकतायुक्त कर दिया हैं। भक्ति की अनौपचारिकता सम्पूर्ण 'मानस' में समाहित हैं। मानस के लंकाकाण्ड़ में श्रीराम को विरथ देखकर विजय की अशंका से अधीर विभीषण से भगवान् राम द्वारा जिस विशिष्ट रथ का उल्लेख किया गया हैं, उसमें गोस्वामी जी का स्पष्ट मन्तव्य हैं कि शौर्य, धैर्य, सत्य शील, बल, विवेक, दम, परहित, क्षमा, कृपा समता, विरति और संतोष से संयुक्त भगवद्भजन ही यथार्थ और वास्तविक हैं। अन्यथा वह नितान्त औपचारिक हैं। यहॉ रथ के बिना सारथी की स्थिति के आधार पर औपचारिक भक्ति की स्थिति स्वतः स्पष्ट हैं-

सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल विवेक दम परहित धोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।।
ईसु भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।।

यहॉ भी तुलसी का भक्ति में अनौपचारिकता का आग्रह स्पष्ट हैं। उपर्युक्त प्रसंगोचित विवेचन से यह स्पष्ट आभासित होता हैं कि भक्ति में औपचारिकता गर्हित हैं। महाराज दशरथ की मृत्यु से शोकाकुल भरत जी के प्रति सान्त्वना के निमित ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी द्वारा भी युगदृष्टा तुलसी ने यही कहलवाया हैं कि भक्ति में औपचारिकता या औपचारिक भक्ति सर्वविधि 'सोचनीय' हैं क्योंकि औपचारिक भक्ति से कल्याण सम्भव नहीं हैं। सन्दर्भित प्रसंग में ही जहॉ सन्यास की औपचारिकता को भी सर्वविधि शोचनीय बतलाया गया हैं। सोचनीय सबहि बिधि सोई। जो न छॉड़ि छलु हरिजन होई।। हरि जन अर्थात् भगवद्भक्त तथा 'छॉड़ि छलु' से स्पष्ट आशय भक्ति की औपचारिकता त्यागकर विशुद्ध अनौपचारिकता भक्ति से हैं। निष्कर्षतः कहना हैं कि 'मानस' के आधार पर आधुनिक परिवेशीय औपचारिक भक्ति सभी प्रकार से सोचनीय हैं। हमें अपनी औपचारिक भक्ति को उसके यथार्थ रूप अर्थात् अनौपचारिकता में अविलम्ब परिवर्तित करना ही होगा, तभी श्रेय की प्राप्ति सम्भव हैं।

"बगुलाराम की नीयत"

-डा० अरूण कुमार 'आनन्द',
चन्दौसी, जि०-संभल, उ०प्र०

हनुमान सिंह का बड़े बाजार में रेडीमेट गारमेंट की दुकान थी, वह बगुलाराम को झवले फ्राक आदि उधार दे देता था। बगुलाराम हनुमान सिंह का कजूंस मित्र था। ऐसा नही कि उसके पास रूपया पैसा की कमी थी. अच्छा खासा सरकारी विभाग में कर्लक था पंद्रह बीस-हजार महिना वेतन पा लेता था। इतना ही महिने में ऊपर की आमदनी सभावित थी. फिर भी एक रूपया खर्च करने में आना कानी करता। मगर बीड़ी उसके मूंह में हमेशा लगी रहती, बुझने पर तिल्ली सुलगा कर लगा लेता एक जोरदार कस खेच कर हवा में उछाल देता। दुकान पर आकर बैठ गया एक जोरदार बीड़ी का कस खेच कर हवा में उछलते हुए बोला-"अमा हनुमान कविता झबले के लिए जिद कर रही है। आखरी महिना है, जब तू ही बता आखरी महिने में रूपये कहां होते है, उसके लिए एक झबिला और किट्टू के लिए एक फ्राक चाहिए?"

हनुमान पहले तो कुछ देर उसे देखता रहा- अरें मियां तुमने कभी किसी का लिया चुकाया भी है, पंद्रह बीस हजार रूप्या महिना मिलता है दस बीस हजार रूपया ऊपर से बना लेते होगे? फिर भी तुम्हारे घर में रूपया नहीं होता? क्या मरते वक्त साथ लेकर जाओगे? सुबह सुबह उधार करने आये हो अभी तो बोहनी भी नही हुई है।"

"अमां हनुमान क्या मुझपर विश्वास नहीं है? सारी रकम एक साथ अदाकर दुंगा न?"

विश्वास करते-करते छः महिना हो गई एक पाई भी नहीं चुकाया तुमने? बीड़ी और दारू के लिए तो तुम्हारे पास रूपये होते है कविता बिटिया और किट्टू के झबला फ्राक के लिए तुम्हारे पास रूपये नहीं है?"

बगुलाराम कुछ क्षण खामोश हनुमान की शकल को घूरता रहा उसे अपनें बगूला नीति की पराजय पर शोभ हो रहा था। होली त्यौहार का माहौल था दुकान पर अमूमन त्योहारो के मौकों पर भीड़ भाड़ हुआ करती है। हनुमान नहीं चाहता था कि त्यौहार पर कोई ग्राहक उधारी करने आयें। वह भी ऐसा कि रकम चुकता करने का नाम ही न ले।

"पहले पिछला हिसाब चुकता करो उसके बाद जितना चाहे माल ले जाओ मैं देने में कहां मना करता हूँ। त्यौहार का मौका है हमें भी बाल बच्चे पालने है मियां।" घर पर आओ पिछला सारा हिसाब शाम को चुकता कर दूंगा।" बगुलाराम केवल धुम्रपान का ही शौकीन नहीं था वह दारू और जुए का भी आदि था जब पत्ते खेलने बैठ जाता तो दारू और बीड़ी के धूएं में कुछ दिखाई नहीं देता था उसे दस बीस हजार रूपयों का दांव लगा लेता था। उसने पून्ह एक बीड़ी सुलगाई और जोर-जोर से कस खिचता हुआ दुकान से निकल गया- "साला, अपने आप को बड़ा मशहूर व्यापारी समझता है। एक झबला और फ्राक नहीं दे सका क्या मैं उसकी रकम लेकर भाग जाता? आग लगवा दुंगा साले की दुकान पर, मेरा नाम बगुला राम है।" बगुला राम भुन भुनाता हुआ बीड़ी का कस खींचता चला जा रहा था. उसकी उम्र अधिक नही थी हनुमान सिंह से 40 वर्ष बड़ा था, हनुमान बड़ो का आदर सम्मान करता था इसलिए ज्यादा कुछ नही कह सका। शाम को दुकान का सारा। काम निपटा कर दुकान बंद करके 8 बजें बगुलाराम के घर पहूंच गया घर दुकान के ही करीब था। आर पर दस्तक देने पर बगला की पत्नि निकली वह हनुमान को बेटा कहकर संबोधित करती थी। बैठक खोल कर अन्दर बैठा दिया। एक गिलास पानी और एक कप चाय कुछ नमकीन टेबल पर सामने रख कर चली गई। एक घंटे बाद बगुलाराम दारू के शरूर में झूमते हुए साये-"आज होली का त्यौहार है, इतने नाराज हो क्या, गले नहीं मिलोगे? तुम्हारा पिछला कितना हिसाब है, बताओ अभी चूकता कर देता हूँ।"

आलमारी के दोनो पल्ले खोलते हुए बोला- "मैं इतना घटिया कंजूस इसान नहीं हूँ। जैसा तुम समझ रहे

हो अनुमान बोलो कैसी चलेगी? सभी अंग्रेजी माकी हैं?'' आज तुम्हे जरूर पिलाना है, इसलिए घर पर बुलाया है।'' (उसने मैकडावल और अरिस्टो करेट हृवीस्कि की दो बोतले खोल कर सामने रख दी।- ''बगुलाराम के घर किसी चीज की कमी नहीं है, हनुमान।''

हनुमान सिंह बगुलाराम के व्यवहार को देख स्तबद्ध रह गया म नही मन कह उठा..'' ऐसा तो कभी किसी ने उसके साथ नहीं किया, बगुलाराम तो पिता के समान है? उसे दुकान पर हुए वार्तालाप पर पश्चाताप हो रहा था। एक झबला और फ्राक दे देता तो कौन सा आसमान टूट जाता एक सौ तीस रूपये का ही तो सौदा था। इतना तो वह प्रतिमाह दान कर देता था।

''क्या सोच रहे हो हनुमान! आज सालभर का त्योहार है पहले जी भर कर पियों, उसके बाद तुम्हारी हिसाब फाईनल कंरूगा, जोड़कर बताओ कितने रूपये हुए?- (अन्दर पत्नि को आवाज दी)- अरी सुनती हो, पकौड़े-गुजिया वगैरह तो लाओ मेहमान के लिए, वह तुम्हारी दुकान नही है, हनुमान, मेरा घर है। यहां दूकान की तरह मोल भाव नही होता।'

अपनी आदत अनुसार बीड़ी सुलगाकर जोर-जोर से कस खेंचता और हवा में उछाल देता. मानो सब कुछ धूएं में उड़ा देना चाहता हों अब तक बगुला राम कई बीड़ियां फूक चुका था। यह संसार उस बीड़ी के धूएं के समाज है, जो वातावरण में धूए का छल्ला वन कर हवा के साथ विलिन हो जाता है। बाद सब शून्य ही शून्य कुछ भी शेष नही रहता। मनुष्य का जीवन भी उसी बीड़ी के धूए की तरह है, एक दिन वातावरण में घुल मिल कर विलिन हो जाना है।

''त्यौहारो में सब लोग खूल छक कर खाते पिते है, रट लगाने लगा अब तो तुम समझ ही गये होगें कि मेरा पगार कहा जाता है? मैं कमाता ही दारू और जुआ के लिए हूँ। तुम्हारी तरह नहीं कि एक एक पाई जोड़ कर दूसरो के लिए रख छोड़ किसके लिए रखना है, दुनियां में भाई बंध बेटा बेटी कोई भी तो अपना नहीं, सब शोहरत और दौलत के भूखे हैं।'' वह उहाका भार कर हँसने लगा।

''मैं शराब नही पीता दोस्त। मेरे घर में शराब तो दूर कोई चाय तक नही पीता-तुम जो देना हो दे दो- मुझे दिल्ली जाना है, दुकान की खरिदारी करने।''

''कितना हिसाब है अब तक का?''

''यही दो हजार आठ सौ रूपयें।''

''चेक दे दूं या नगद लोगे?''

''जैसा तुम चाहो।''

''दो हजार का चेक बना देता हूँ अठ सौ नगद ले जाओं।'' बगुलाराम ने दो हजार का चेक बना कर हनुमान के हाथ में थमा दिया था और आठ सौ रूपया कमला (उसकी पत्नि ने लाकर हनुमान के हाथ में रख दिया था। ''और भी कुछ हो तो दिल्ली से आकर ले लेना- इनके पास तो नगद रूपया रहता नहीं, रूप्या आते ही धड़े की तरफ भागते हैं, कल शाम पता नहीं सौभग्य से सट्टा लग गया तो तुम्हे रूपये मिल गयें।'' (कमला ने पति के प्रति कारक्ष करते हुए कहा)- इनका क्या कब किसको क्या कह दें- कभी होस में तो रहते नहीं, हम सब लोग इनसे बहुत परेशान है। अभी तमाम लोग होली मिलने आएगें रात तक ऐसा ही चलता रहेगा।''

हनुमान सिंह वापस चला आया। अच्छा खासा कमाऊ सम्पन्न घर के बावजूद, उस घर की स्थिति दयनिय थी, घर में एक जवान अविवाहित बेटी है। उसके हाथ पीले करने की बगुलाराम को तनिक भी चिता नहीं हैं। कहता है आधुनिक जमाना है, बेटियां अपना वर स्वयं चुनाव कर लेती है, फिर उसके शादी की चिता कैसी? जिसे पसन्द करेगी उसी के साथ फेरे डाल कर विदा कर देगें। आजकल तो युवक-युवतियों में लव मैरेज और कोर्ट मैरज का चलन बढ़ता जा रहा है। सामाजिक सस्कार रितिरिवाज परम्परायें सब समाप्त होते जा रहे है। सामाजिक परम्परा के अनुसार तो लड़के वालें दस लाख की मांग करते हैं, इतनी रकम हम शादी के लिए कहां से लायेगे? लड़के लड़की का विवाह व्यापार बन गया हैं, लड़को का सौदा लाखों में होता है के बावजूद निर्दोष दुलहने दहेज ज्वाला में जलादी जाती है। लड़की के जीवन सुरक्षा की कोई गारन्टी नही है, तो फिर हम सांस्कृतिक संस्कारिक पारिग्रहण संस्कार को क्यों महत्व दे?''

बगुला राम सामाजिक व्यक्ति है, लेकिन वह दहेज प्रथा का सशक्त विरोधी है। इसीलिए अपनी लड़की के लिए वर तलाश करने को महत्व नही दे रहा है। चिंता मुक्त है। बगुलाराम की ऐसी विचार धाराएं जान कर हनुमान को इतना आत्मिक कष्ट हुआ किं उसकी आत्मा चिन्तकार उठी। कन्याएं तो देवी रूप होती है, देवीयों का भी भरे बाजार सौदा होने लगा है। क्या होगा इस संसार का भविष्य? देश का हर एक धर्म सम्प्रदाय इस दहेज रूपी कूप्रथा में उलझा त्राही-त्राही कर रहा है। क्या यह कूप्रचलन दारू जुआ धुम्रपान के भ्रूण हत्या से कम है? सभवतः इसी कारण भ्रूण हत्याओं का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। कमला एकदम खामोश हो गई थी,

''बाबू जी ने बुलाया था कल दुकान के कारिगरो को मजदूरी बांटना है दिल्ली से माल लेकर आने के बाद यह काम हो पायगा, रूपयों की कुछ कमी हो रही थी इसलिए ही कहा था बगुला जी से अन्यथा मैं कभी नहीं कहता, बगुला जी के बारे में मुझे बिल्कुल जानकारी नही थी, मैं तो समझ रहा था १५-२० हजार महिना पगार मिलता है, रूपयो की कमी घर में थोड़े ही होगी, अच्छा भाभी मुझे माफ कर देना, परेशानी हो तो दुकान पर भेज देना एक दो दिन बाद, थोड़े रूपये दे दूंगा।''

फिर दूसरा रविवार आया, रूटीन अनुसार हर रविवार को दिल्ली माल लेने जाना होता, इसी व्यवसाय के चार पैसे बचते तो घर का खर्च चल जाता। दिल्ली से थोक रेट पर कटपीस लाकर दुकान में ही कारिगरों से गारमेन्ट तैयार करवा कर बेचता था हनुमान। बगुलाराम उस दिन के बाद हनुमान के दुकान पर नही गया था महीनों बाद जब एक दिन दुकान के आगे से निकला तो दुकान बंद थी, दो घंटे बाद जब घूम कर उसी दुकान के आगे से निकला तब भी दुकान बंद थी। जिज्ञासा वस पड़ोस के दुकानदार से पूछा ''यह हनुमान रेडिमेन्ट की दुकान बंद क्यों है?'' पहले तो पड़ोसी दुकानदार ने ऊपर से नीचे तक एक क्षण घूरा बोला- ''तुम्हे मालूम नही है बाबू! हनुमान का रविवार को दिल्ली में स्वर्गवास हो गया, आज उसकी उठावनी है। लगता है किसी गरीब की बद्दुआ लग गई, उसे बहुत अच्छा परोपकारी आदमी था। दुकान कौन खोलता उसका कोई छोटा भाई भी तो नही है, दो बालक छोटे है, बस यही दुकान परिवार के आजिविका का साधन है।''

यह सब सुन बगुलाराम के पैरो के नीचे से जमीन खिसक गई। सोचने लगा-हनुमान तो परमार्थवादी परोपकारी व्यक्ति था, वह भला किसी को क्यों सताता? बद्दुआ तो उसकी लगती है जो निर्दोष पर अत्याचार करता है।''

उसी दिन से बगुलाराम के दिमाग में यह घुस गया कि- 'इन्सान के जिन्दगी मौत की कोई मौत की कोई निधारित सत्य नहीं है। सब कुछ चार दिन का मेल है, किस वक्त अचानक छोड़कर जाना पड़े कोई गारन्टी नही है। उसी दिन से बगुलाराम ने दारू जुआ त्याग दिया था। रह-रहकर हनुमान की दोस्ती की यादें उसे कटौच रही थी। ऐसा दोस्त जिसने कभी भी उसकी बुरी आदतों की आलोचना नही किया।

बगुलाराम को लगा-मानो ऊपर बैठा भगवान को हनुमान के साथ जो किया अच्छा नही किया अल्पायू में ही उसे अपने पास बुला लिया, उसने जीवन का दूसरा खण्ड भी अच्छी तरह नही देखा था बूढ़े मां बाप का अकेला संरक्षक था। सोच रहा होगा नाहक मैने ऐसा इन्सान क्यों बनाकर संसार में भेजा जिसने कभी किसी की आलोचना तक नहीं किया। एक मैं हूं ऐश्वर्य में डूब कर भूल गया कि मनुष्य क्या है, दारू जुआ के शरूर में मानवता को तार-तार करके रख दिया, सबको परेशान ही करता रहा संभवत इसीलिए उपर वाले ने हनुमान सिंह को अपने पास बुला लिया। मृत्युलोक में मनुष्य रूप जून में आए है पशु व्योवहार के लिए नही।

मनुष्य जैसी सोच-दूसरों के प्रति व्योहार करता है वैसा ही परिणाम उसके सामने आता है। यह मानव शरीर नश्वर है इसे एक दिन इसी ध ारती पर छोड़कर जाना है।'' यह संसार तो एक दुकान है सुबह खुलती है शाम को बंद हो जाती है, यह शिलशिला जीवन भर चलता रहता है।

कविताएं/गीत/ग़ज़ल

दोस्त

कभी खुशी कभी गम मिलेंगे
स्वार्थी लोग तो हरदम मिलेंगे
यकीन नहीं तो आजमा के देखो
रोशनी में भी अक्सर हम मिलेगे
अगर भावना शुद्ध रही तो
अंत में तुम्हें प्रियतम मिलेंगे
होली पर न मिल पाए साजन
गोरी के दो नयना नम मिलेंगे
चाहत हो मिलने की अगर
प्रभु कृपा से हमेशा हम मिलेंगे
साले की शादी में गर पहुचे तो
रस गुल्ले और चमचम मिलेंगे
जिधर देखो उधर हमकों यादव
बस बन्दूक, गोले बम मिलेंगे

-डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव 'पथिक',
जवाहर नगर सतना, म०प्र०,

जय भारत

जय भारत मिनी जगत,
शांत का संरक्षक
धरती थी छवि न्यारी,
महादानी स्वाभिमानी
प्राणी सात का अन्नदाता,
दूसरों के लिए निछावर
अपनी जीवन-यात्रा,
निःसहायों को पनाह देने
करता अव्वल कर्म
भेद भाव मिटा कर सब का
निभाता सेवा धर्म
पढ़ाई लिखाई में सदा निरत
करता भूल सुधार
समाज की तरक्की करना
मंजिल मिटाना अंधकार
नव जागरण स्नेह का बंधन
करेगा हिंदुस्तान
सिख ईसाई हिन्दू भाई
जैन बौद्ध मुसलमान
सहवस्थान में मिलजुल हो कर
देश में लाएँगें क्रांति
अन्याय अत्याचार मिटाएगे
सबको मिले सम्मति।
तिरंगा लहरेगा हमेशा
आसमान में चार चाँद,
दुश्मन भी बदला जाएँगें हमारे
टूट जाएगी उनकी नींद
दोस्ती के हाथ पकड़ेगे हमारे
तोबा करके संशोधन
शैतानी को हटा देगे
ईशु राम रहिमन
एक ही संस्कार भिन्न अवतार
बनाएंगे सच्चा इन्सान
आओ सब भारत के वासी
मिलकर करेंगे नव निर्माण।।
बढ़ेगी शोहरत जीवन अमृत
मिलगयी गंगा कावेरी,
जय भारत मिनी जगत
शांत अहिंसा क्रान्ति कारी,
धरती की छवि न्यारी।।

-श्री हरिहर चौधरी,
हिंजिफि काटु ओड़िसा

परिवर्तन

पहले सिर झुकता था
श्रद्धा से
अपने से बड़ों के आगे
करते थे स्पर्श चरणों का
पाकर आशीर्वाद
हर्ष से भर जाता था
मानुष मन
अब रह गई सिर्फ औपचारिकता
मात्र शिष्टता के नाते
दुआ सलाम ही रह गया
न तो हृदय
करते सम्मान
न ही पाते आशीर्वाद
चरण स्पर्श कर
अब सम्बंधों में
मात्र औपचारिकता रह गई
पता नहीं
ये औपचारिकता भी
आखिर कब तक
बची रह पाएगी।

-सूरज तिवारी 'मलय',
मुंगेली छत्तीसगढ़

बुढ़ापा

गलती थी मेरी,
जो तुमको जन्माया।
या गलती हैं तेरी?
तू मुझे ठुकराया।
हकीकत यही हैं, कि
गलती ना मेरी।
हो शायद तुम्हें गम,
हुई हैं ना तेरी।
हाथों ने मेरे,
सिखाया था चलना
हाथों ने मेरे
खिलाया था खाना,
तू छोटा था बालक,
नहीं रेखा भूखा।
क्या हैं? कभी बोल
तुमसे था पूछा।

सोची थी मेरा
बनेगा सहारा,
कमजोर होगा तन
आयेगा बुढ़ापा,
मगर तू तो घर से
कर दिया बाहर,
समझ के तू नाकाम
मुझको तो शायद।
भूला तू दिया
तेरे बचपन के दिन को,
तुम्हें भी फँसायेगा,
एक दिन बुढ़ापा।।

-निगम प्रकाश कश्यप,
जिगना, मिर्जापुर, उ० प्र०,

पृष्ठ 14 का शेष...दुनिया की सबसे

लचीला बनाती है. इसके अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित, विज्ञान एवं अन्य भाषाएँ ग्रहण करने में सहायता मिलती है. वैदिक ग्रंथों की बात छोड़ भी दी जाए, तो भी संस्कृत भाषा में साहित्य की रचना कम से कम छह हजार वर्षो से निरंतर होती आ रही है. संस्कृत केवल एक भाषा मात्र नहीं है, अपितु एक विचार भी है. संस्कृत एक भाषा मात्र नहीं, बल्कि एक संस्कृति है और संस्कार भी है. संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है और नद वसुधैव कुटुंबकम् की भावना भी!
साभार : राकेश चौधरी तेवतिया जी की पोस्ट से।

काम की बातें

१) भूख पेट, खाली जेब और झूठा प्रेम, इंसान को जीवन में बहुत कुछ सिखा जाता है।
२) प्रतिभा का विकास शांत पर्यावरण में होता है और चरित्र का विकास मानव जीवन का तेज प्रवाह में।
३) सकारात्मक व्यक्ति सदा दूसरों में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता हैं।
४) सपने वो सच नहीं होते जो सोते वक्त देखे जाते हैं सपने वो सच होते हैं जिनके लिए आप सोना छोड़ देते हैं।
५) संभव की सीमा जानने का केवल एक ही ढ़ँग हैं, असंभव से भी आगे निकल जाओ।
६) सफलता तुम्हारा परिचय विश्व से करवाती है और असफलता तुम्हें विश्व का परिचय करवाती हैं
७) कठिन समय में समझदार व्यक्ति रास्ता ढूंढ़ता है और कायर बहाना।
८) दो चीजें देखने में छोटी नजर आती हैं। एक दूर से और एक गुरूर से।
९) गलत फहमी का एक पल इतना विषैला होता हैं। जो प्यार भरे सौ लम्हों को एक क्षण में भुला देता है।
१०) जीवन में एक बार जो निर्णय कर लिया तो फिर पीछे मुड़कर मत देखों, क्योंकि पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते।
११) आप जो आज अपना मूल्य आंकते है, कल की सफलता उसी का साकार रूप है। **-संग्रह-मनीषा सैनी**, जींद, हरियाणा

पृष्ठ 15 का शेष....सर्दियों में स्वस्थ

सेवन करना, वैक्टीरिया वायरल इम्युनिटी पावर का कमजोर होना, ब्लडप्रेशर बढ़ना, तेलीय चीजें खाने बाद तुरन्त ठंड़ा पानी पीने से गला पकड़ना, रात को सर्द ओस में टहलना, धूप सेकने के तुरन्त बाद ठंड़ा पानी पीना, बदलते मौसम की बारिश में भीगने से

सर्दी जुकाम के लक्षणः छींके आना, नाक बहना, बुखार महसूस करना, सिर दर्द होना, गले में दर्द और खर्रास होना, बदन में दर्द सूजन रहना, भूख कम लगना और खाने स्वाद नहीं लगना मुंह और गले से कफ खांसी में आना नांक, कांन, आंखें लाल होना, चेहरे त्वचा का रंग बदलना, शरीर गर्म रहना, जुकाम से आवाज गला बैठ जाना

सर्दी जुकाम से बचने के तरीकेः ऊनी कपड़े, दस्ताने, टोपी, मफरल आदि गर्म कपड़े पहने, जुकाम संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क से बचें, ठंड़ हवा में जाने से बचें, हाथ साफ रखें, सर्दियों में बार-बार हाथ धोना चाहिए, बाइक चलाते समय, यात्रा करते समय कान, नांक, हाथों को ठंड सर्द हवा से बचने के लिए रूमाल, मफरल, टोपी, कनपट्टी आदि पहनें, आसपास साफ-सफाई

दीप परम्परा के लिए नहीं

''दीप,, परम्परा के लिए नहीं,
रोशनी के लिए जलाए!
''रोशनी,,
वैभव प्रदर्शन के लिए नहीं,
कथित अंधकार को मिटाए।।
आइए इस बार, रोशनी और दीप को,
सही मायने में परिभाषित कीजिए!
अंतस में आस्था और विश्वास का,
इक नूतन दीप जलाए!!
नूतन सद् संकल्प के साथ,
ज्योति पर्व अभिनव ढ़ग से मनाए!!
आप और आपके परिवार के लिए,
सुख, शन्ति समृद्धि के लिए!

-कुँ० बीरेन्द्र सिंह विद्रोही
लश्कर, ग्वालियर, म०प्र०

जलें दीपक नेह के

दीप एक ऐसा जलाओ, जो तम हरे व्यवहार का।
घृणा-ईर्ष्या दूर कर, उजियार दे बस प्यार का।।
सुख की मृगमरीचिका में, चैन सारा उड़ गया,
वास्तविकता भूल बैठा, पत्थरों से जुड़ गया,
बन गया मालिक भले ही, कोठी बंगला कार का।
दीप एक ऐसा................
आजकल सब रिश्ते-नाते, खो रहे है स्वार्थ में,
अपना हित सब साधते, ढ़ोंग है परमार्थ में,
दल बदलने की विकलता, आजकल है पार्थ में,
खो गया उल्लास मन से, उत्सवों-त्यौहार का।
दीप एक ऐसा................
घोर तम है हृदय में, भरा मानव देह के,
प्यार का होवें उजाला, जलें दीपक नेह के,
प्रेम और विश्वास हर लें, शूल सब संदेह के,
मन रहे स्वच्छ हरदम, अब यहाँ नर-नार का।
दीप एक ऐसा................

-डॉ० अनिल शर्मा 'अनिल',
धामपुर, बिजनौर, उ०प्र०

विद्यमान रहे मानवता

मौन में भी उत्तर है, उत्तर न मिलते बोली से भी।
बोली से भी प्राणी मरते, बचने हैं गोली से भी।।
गर मन हृदय हो विशुद्ध पवित्र, नहीं जरूरी इत्र की।
गर ईमानदार हो और, क्या जरूरी नकली मित्र की।।
गर बच्चा रहे यह जगत, ईर्ष्या, द्वेष छल छदम जाल से।
प्राणी को दर्शन न होने, कभी भी दुष्ट दुष्काल से।।
देखने में उदर बहुत लघु, पर मन तरंग से फैलता ।
देखने पलक झपकने, जगत की सम्पदा यह लीलता।।
सम्पत्ति तो रहती यहाँ-वहाँ खो जाती इन्सानियत।
किट-किटा अट्टहास कर हवश रूप लेती हैवानियत।।
और कुछ रहे या न रहे, गर विद्यमान रहे मानवता।
तब किसके प्रति क्या कहे? डोलते उसके पीछे शास्ता।।

-दाननगर, खगड़िया, बिहार

तलवारों में जलती धार भर ड़ालो

पुरानी हो चुकी है बात, आजादी की मत समझो।
न समझो तुम कि राहें, फूल सी आसान हो बैठी।
करें जो भूल से भूल, सीमा तोड़ने वाली।
नहीं समझेगें मन से बात मन को जोड़ने वाली।
न चुप बैठो कि उनके शीश को, तुम काट कर डालों।
उठो इन कुछ तलवारों में जलती धार भर डालो।।

ये दुश्मन की है साजिश, आग जो बुझ-बुझ के जलती।
नियत गन्दी गलत करतूत, उनके मन में पलती हैं।
करें जो देश में ही देशद्रोही, सी भरी बातें।
समझना वो भी दुश्मन हैं, करेगा घात पर घातें।
दुश्मन को मिटाने की, हृदय में व्यास भर डालो।

उठो इन कुंद तलवारों में, जलती धार भर डालों।

करो जिस ओर रूख अपना, किदम तूफा का थम जाये।
तुम्हारी गर्जना से सिंधु भी, दो पल ठहर जाये।
अरे! मुक्त जायेगा यह आसमां, तेरे इशारों पर।
ये पर्वत भी पिघल कर, राह का फरमान बन जाये।
शक्ति की अतुल गुंजान से ब्रम्हाण्ड भर डालो।
उठो इन कुंद तलवारों में, जलती धार भर ड़ालो।

शहीदों की चिताओं पर, लगेगें हर बरस मेले।
ये सच्ची बात हैं, इसको हृदय से मान लेना तुम।
न टूटे श्रृंखला दीपों की, तुम को आने मत देना।
जीवन के इसी उद्देश्य को, बस ठान लेना तुम।
कि माँ के आंचलों में, आज फिर त्यौहार कर ड़ालो।
उठो इन कुंद तलवारों में, जलती धार भर ड़ालो।

-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली',
रायबरेली, उ०प्र०

बाते और मौन

बाते-बाते बात के बिना मौन अच्छा
बात मन को चंचलता करते हैं
मौन से चंचल दूर रहेगी
बाते कहते हैं ऑसू बहाते हैं
मौन गहरा होती हैं चिंता रहित
बात झगड़ा का कारण
मौन भुलाता हैं चिंत (विवशता)
बाते विरस का कारण मौन से सरस
बातें (बाण) तीर की तरह मौन मिठास
बाते वर्षा का धारा मौन फूल का सुगंध
बाते सूर्य के जैसे मौन चाँद के जैसे
बाते फूल के जैसे मौन निरांतक

चादर

कौन बिछाया चादर गगन में
उसके ऊपर सफेद रूई ड़ाला हैं
चादर भर नक्षत्र का समावेश
तारे ही सूर्य की मोती
शरीर झाड़कर जगाने वालों को देखा हैं
चमकते-चमकते रहे हैं क्या देखा आपन? ।।कौन।।
सूर्य का सुदंरता का चमत्कार क्या देखा आपने
पहाड़ों के बीच उदय होने को दुष्ट देखा हैं?
चलने का रथा की गाली देखा आपने
सूर्य हॅसने से पृथ्वी लज्जित हो गई
युग-युग तक तुम सखा हो कह दिया
माता के बाहने चमकने की तरह रंग
सूर्य का ताप देखा पृथ्वी सिरिदेवी कहलाये
माता भी उसी के जैसे माना मैं माना
-जे० वी० नागरत्नम्मा, शिवमोग्गाा, कर्नाटक

समय की बात

किसी के दर्द को मैंने, कभी समझा नहीं साथी।
उठी नर्जर कभी भुकने, का आलम क्या भला जाने।।
झुकी होती जो नजरें तो निगाहें देखती उनको।
हमारे पांव से सटकर चले जो बनकर परछाई।।
उन्हीं तिनकों पर चढ़ने जब लगा वो आसमानी रंग।
गजब हैरत में था कि मेरी पहचान ठुकराई।।
समय की बात हैं इस पर किसी का जोर है कैसा।
कभी साहिल न मिला मुझको, कभी करती न नजर आयी।।
खुदा के घर हिसाबी काम बड़ा जोरों पर होता हैं।
न खुश हो तू कि लेकर तू बड़ा मीरे जदा निकला।।
अभी उसकी खबर है जा रहा हैं वो बना मुजरिम।
जाना हैं तुझे भी देख तेरी भी खबर आयी।।
-अजय द्विवेदी, रायबरेली,उ०प्र०

•जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी.

•यदि लोग आपके लक्ष्य पर हंस नहीं रहे है तो समझो आपका लक्ष्य बहुत छोटा हैं.

राष्ट्रीय गोष्ठी

हिन्दी काव्य जगत के सूरज माने जाते हैं सूरदास

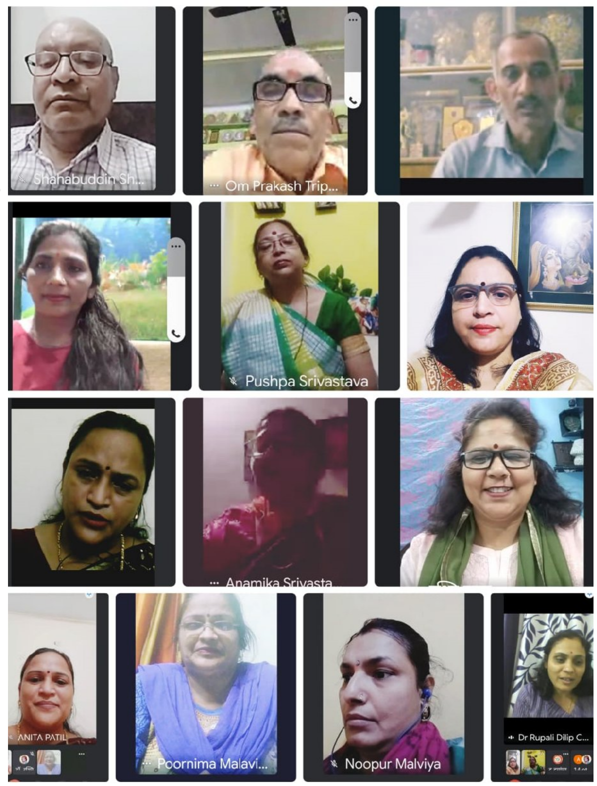

सूरदास जी मनमोहक विषय कहा जाता है सूरदास जी के साथ लेखक वह नहीं होते थे तो श्री कृष्ण स्वयं आ जाते थे हिंदी काव्य जगत के सूरज माने जाते हैं कृष्ण भक्ति की अविरल धारा अनन्य उपासक सूरदास जी सारस्वत ब्राह्मण और उनके पिताजी पंडित राम दास जी थे उन्होंने सवा लाख मनोहर पदों का विश्लेषण किया आंखें ना होते हुए भी मन की आंखों से होशियारी से अपना चेष्टा चित्रण किया। मैया कबही बढ़ेगी चोटी कितनी बार मोहि दूध पियत भई यह अजहू है छोटी। उक्त उदगार विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज द्वारा आयोजित राष्ट्रीय आभासी गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में गुवाहाटी, असम से जूड़ी डॉ दीपिका सितोदिया 'सखी' ने व्यक्त किए।

विशिष्ट वक्ता डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी, सोनभद्र, वात्सल्य और श्रृंगार रस के शिरोमणि भक्त कवि सूरदास के पदों का परवर्ती हिंदी साहित्य पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। श्री कृष्ण का बाल एवं किशोर रूप ही इन कवियों को आकर्षित कर पाया है इसलिए इनके काव्यों में श्री कृष्ण के ऐश्वर्य की अपेक्षा माधुर्य की ही प्रधानता रही है। इस शाखा के लगभग सभी कवि गायक थे।

चेन्नई, तमिलनाडु से डॉ० अनिता पाटील ने कहा कि हिंदी साहित्य के महान कवि सूरदास जी की भक्ति में हमें विविध भाव दिखाई देते हैं। जैसे दैन्य भाव जहाँ भक्त स्वयं को दास और प्रभु को मालिक समझता है। ऐसी माता जो उसके सभी अपराधों को क्षमा करके, उसके लिए हमेशा अच्छा हीकरेंगी। मातृ पितृ भाव, सखा भाव वर्णन में सूरदास का स्थान कोई नहीं ले सकता।

जलगांव, महाराष्ट्र से डा० रुपाली दिलीप चौधरी ने कहा कि हिंदी में कृष्ण काव्य का श्रेय श्री वल्लभाचार्य जी को जाता है। वल्लभाचार्य जी के पुष्टिमार्ग में दीक्षित होकर सूरदास जैसे अष्टछाप के कवियों ने कृष्ण साहित्य की रचना की। हिंदी साहित्य में अष्टछाप का साहित्यिक सांप्रदायिक, धार्मिक, कलात्मक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सभी दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। सूरदास के संबंध में अक्सर कहा जाता है "न भूतो न भविष्यति।" कविता की सबसे ऊंची वस्तु है तन्मयता और तल्लीनता। कवि का यह गुण सूरदास में अपनी चरम सीमा पर पहुंचा हुआ दिखाई देता है।

लखनउ, उ०प्र० से श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव 'रश्मि लहर' ने कहा कि हम कह सकते हैं कि चाहे सूरदास का भक्ति सिद्धांत हो या उनके रचित पद हों, इन्होंने तात्कालिक मनुष्य जीवन का एक पूरा चित्र खींचा है। सूरदास के पदों से उस समाज का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इनके पदों में माता के गर्भ में आने से लेकर मृत्यु तक का वर्णन किया गया है।

मातु गर्भ तिथि पाइ पिता दस माह

उदर से डारै।

आयोजन में प्रयागराज से श्रीमती नुपुर मालवीय, डॉ० पूर्णिमा मालवीय, फैजाबाद से श्रीमती अनीता श्रीवास्तव भी वक्ता के रुप में अपने विचार व्यक्त किए।

आयोजन का शुभारम्भ श्रीमती अनामिका श्रीवास्तव द्वारा सस्वर सरस्वती वंदना से हुआ। अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम की संयोजक रायबरेली की श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', हिन्दी सांसद, उ०प्र० प्रभारी द्वारा किया गया। आभार संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया। आयोजन का सफल संचालन बाल संसद प्रभारी डॉ० रश्मि चौबे, गाजियाबाद ने किया।

आयोजन में डॉ० प्रेमलता चुटैल, डॉ०भरत शेणकर, डॉ०सुधा सिन्हा, डॉ० पोपट आम्टे, लक्ष्मीकांत वैष्णव, डाली मौर्या आदि उपस्थित थे।

पृष्ठ 11 का शेष गणेश जी के वाहन...

पर दीर्घाकार। इसका तात्पर्य है कि भगवान गणेश अपने भक्तों के हृदय में विराजमान होकर उनके सारे पाप को दूर करके सुख शांति प्रदान करने में सहायता करते हैं। विशालकाय भगवान की छोटी छोटी आंखों पर सुक्ष्म दृष्टिपात करने पर हमें ज्ञात होता है कि संसार के जितने भी गूढ़ रहस्य है, उन्हें समझने के लिए सूक्ष्म दृष्टि की ही आवश्यकता होती है। किसी भी विषय पर गहनता से सोच-विचार कर आगे बढ़ना वैज्ञानिक सोच कहलाता है।

गणेश जी शिव और पार्वती के पुत्र हैं। शिव और पार्वती को श्रद्धा एवं विश्वास का प्रतीक माना जाता है। एक श्रुति के अनुसार आत्मा ही संतान के रूप में प्रकट होती है। इसलिए भवानी शंकर नंदन में श्रद्धा और विश्वास दोनों स्वतः प्राप्त है। कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता ने वेद और शास्त्र सम्मत तर्क द्वारा स्वर्ग पर भी विजय प्राप्त कर ली थी। तर्क को कुतर्क न होने देने के लिए श्रद्धा विश्वास के प्रतीक गणेश जी को मूषक के ऊपर स्थापित किया गया है। कलयुग का मनुष्य अंधविश्वास से अपना अनर्थ न कर बैठे इसलिए उसे तर्क रूपी चूहे को गणेश जी का वाहन बना कर अगाह किया गया है। आज के संसार में तर्क को प्रायः कुतर्क में बदलने की चेष्टा निरंतर हो रही है। विशेषकर मुगलों और अंग्रेजों के शासन काल में भारतवर्ष की सनातन शिक्षा-शिक्षण परंपरा को नष्ट कर अपने धर्म और शासन व्यवस्था के हिसाब से बदलाव लाकर कुछ ऐसे विषाद भरे पठन-पाठन का प्रचलन शुरू किया। एक ऐसी विचारधारा का प्रतिपादन किया गया जिससे भारतवर्ष में युगो युगो से विद्यमान सनातन धर्म और हिंदू धर्म की महान मान्यताओं, परंपराओं और रीति रिवाजों पर कुठाराघात हुआ। शायद यही कारण है कि हमारे ऋषियों ने श्रद्धा विश्वास के प्रतीक गणेश जी को मूषक पर बैठाया है।

क्या आप लिखते हैं ?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1-प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर

2. बिक्री की व्यवस्था

3-प्रचार-प्रसार की व्यवस्था

4-विमोचन की व्यवस्था

5- ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

तपती रेत

डॉ० जेबा रशीद,
जोधपुर, राजस्थान

क्षितिज तक धूप पसरी हुई थी। दोपहार की लू से चक्कर काटती रेत के बवण्ड़र दौड़ रहे थे। सूरज आकाश में जल रहा था ओर धरती तप रही थी। अन्नो की छाती भी धरती की तरह जल रही थी। सामने छत की मुंडेर पर सूखने ड़ाले गए कपड़े फरफरा रहे थे। उसे लगा मेरा दुःख भी इसी तरह फरफरा रहा हैं। वह खिड़की में अपनी कुहानियां टिकाएं खड़ी थी। दोनों हथेलियों पर ठुड्ड़ी रख कर चुपचाप सामने खण्ड़र को देखती रही। ''क्या हुआ?'' बशीरा ने पूछा। वह चुप रही।

''अरी कुछ बताती क्यों नहीं क्या हुआ? किसी ने कुछ कहा हैं क्या?. ...आजकल तेरा दिमाग आसमान पर चढ़ गया हैं।'' वह खींजकर बोला। फिर भी उसने परवाह नहीं की।

''हरामखोर गूंगी हो गई क्या? बता नहीं तो...।''

''तो क्या कर लेगा तू...बोल क्या करेगा...मारेगा मुझे?..घर से निकाल देगा? क्यों नही सग अधिकार तो मर्दों की ही तो मिले हुए हैं।'' वह बिफर कर बोली।

आज अन्नों की पूरी पुरूष जाति पर क्रोध आया हुआ था। ''अरे क्या बक रही है तू...हुलिय बिगाड़ दूंगा भूतनी का...। ''अरे जा बहुत देखे तरे जैसे....!''

''आज क्या तू पागल हो गई?'' उसने हैरत से पूछा।

हॉ इतने साल तो मैं पागल ही तो थी। अब अक्ल आ गई हैं। क्यों ड़रती फिरूं मैं मरदों से....जा निकल मेरे घर से''

अनारकली ने दरवाजे के पास जाकर दरवाजे की चिटकनी खोल दी। बशीरा उसे आश्चर्य से देख रहा था।

हॉ इतने साल तो मैं पागल ही तो थी। अब अक्ल आ गई हैं। क्यों ड़रती फिरूं मैं मरदों से....जा निकल मेरे घर से''
अनारकली ने दरवाजे के पास जाकर दरवाजे की चिटकनी खोल दी। बशीरा उसे आश्चर्य से देख रहा था।

यू तो रोज ही छोटी-छोटी बातों में तू-तू मैं-मैं होती रहती थी। एक दूसरे को फाड़खाने की नौबत आ जाती थी पर जल्दी ही वापस दोस्ती हो जाती थी और गले में बाहें डाले खुशी से जीने लगते।

''मैं तुझे तलाक देती हूँ।'' वह जोर से बोली ''जा भाग यहॉ से।''

''तुझे होश नहीं हैं।'' न जाने क्या सोचकर वह तेजी से बाहर चला गया। मृदुला ने खुद को कागज की नांव की तरह अतीत के प्रवाह में बहने छोड़ दिया। अतीत की घटनांए उसकी ऑखों के सामने तैरने लगी। अगर उसकी जिन्दगी में वो लम्हें नहीं आते तो शायद वह कभी मशहूर दाई का काम नहीं करती होती। किसी करोड़पति घराने की बहू बनकर ऐश कर रही होती। तब उसके चारों तरफ उजाला था। शाम होते ही आसमान रंग बिरंगा हो जाता था। हर सुबह खुशबुओं से महकती थी। कहीं कोई अभाव नहीं। वे दिन कितने खुशनुमा थे। चिड़ियों की उड़ान उसे कितनी अच्छी लगती थी। अब तो आसमान मटमैला हो गया हैं। धूप सवेरे को ठंडी हवा को जलाने लगी हैं। किरणें तिलमिला कर गर्म हो गई। उसे लगा किसी अभिशापपूर्ण निश्वास सी गर्म हवा मेरे चारों तरफ बह रही है। जब वह इस गांव में आई थी उसके पास कोई सामान नही था बस केवल प्रेमी द्वारा दिया गया नाम था अनारकली। अनारकली ....अनार की कली को सुन्दर...नाजुक गोरे गुलाबी रंगत की नादान लड़की। अधिक पैसा व प्यार ने उसे विद्रोही बना दिया था। माता-पिता ने मेरी बात

नहीं मानी तो मैं उनकी बात क्यों मानूं? मुझे प्रेम करने वाला साथी मिल गया है तो घर वालों को ऐतराज क्यों? बाहर वर्षा की झड़ी लगी थी। रिम-झिम की ध्वनि के बीच रेलगाड़ी

अपनी तेज गति से दौड़ जा रही थी। उनींदी ऑखों से मृदुला ने चन्दनसिंह के सीने पर सिर रखते हुए पूछा ''हम कहॉ जो रहे हैं? इस धरती पर हमारा स्वर्ग कहॉ हैं।''

''शिमला....होटल में कमरा बुक हैं। वहॉ शादी करके वापस आ जायेगें फिर तो हमें तुम्हारें घर वाले अपना लेगें।'' चन्दन ने कहा।

''ओ डार्लिग--माई लव'' वह खुश होकर बोली।

''तुम दुल्हन बनने के लिए गहने कपड़े लाई हो ना?

''हॉ! पूरी तैयारी हैं..देखों उन दोनों अटैचियों को''

''वेल'' उसके होठों पर मुस्कान तैर गई।

चार दिन शिमला की यात्रा के रोमांचक क्षणो में मन पसन्द साथी को पाकर स्वयं ही समझ न पाई कि जब वह समर्पिता बन गई। प्रणय सागर में आकण्ठ डूबती रही।

उसका न तो मन कुंवारा रहा न तन। देह का सामीप्य और मन का नैकट्य पाकर वह खुश थी। जिस पुरूष को पाने की अभिलाषा थी। वह सहज ही प्राप्य हो गया। उसके सानिध्य से वह सम्पूर्ण नारी बन गई।

लेकिन वह न भूल पाया कि वह शादीशुदा हैं और शीघ्र ही पत्नी के पास पहुॅचना हैं। मृदुल..मेरी प्रेमिका ने मेरे लिए त्याग किया हैं। मुझे लखपति बनाया हैं....तो मैंने भी किया उसे चार दिन भरपूर प्यार दिया हैं।

''अनार हमें यहॉ कोई पहचान लेगा। शाम की गाड़ी से हम नैनिताल चल रहे हैं।...शादीर वहीं होगी।''

गाड़ी अपनी रफ्तार से बढ़ रही थी। आस-पास प्राकृतिक दृश्य को देखते- देखते वह शादी के सपनों में खो गई। वह बेफिक्र होकर सो गई। जब उसकी ऑख खुली सामने बर्थ पर चन्दन के स्थान पर एक महिला को सोते देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने देखा चन्दन के साथ उसकी अटैचियां भी गायब हैं। वह घबरा गई। गहना कपड़ा लेकर वह गायब हो गया। ढ़लती रात में पीला उदास चॉद खिड़की से रेल के साथ अकेला दौड़ता नजर आ रहा था। उसका सब कुछ बिखर गया। वह ड़र व सर्दी से कांपने लगी। सामने लेटी महिला ने उसे कांपते देखा तो अपने थर्मस से गरम काफी निकालकर प्याला थमाते हुए कहा'' लो पीलो''

''हाय में लुट गई...दीदी मुझे क्या हो रहा हैं?'' वह रोने लगी।

डॉक्टर नीला गहरे सोच में डूब गई। उसे रोते देखकर उसकरी स्थिति समझने में देर नहीं लगी। मृदुला को चन्दन के इस व्यवहार की आशा नहीं थी। अब यंत्रणाकातर दिल को किस तरह समझांए। उसके कपोलों पर आंसुओं की मोटी धार बह निकली। दर्द भरी सिसकियां गूंजने लगी। अचानक उसके लुभावने सपनों को झटका लगा। अन्नों को लगा मेरे पांव तपती रेत में धस गए हैं। तपती रेत की जलन में उसके लिए खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो गई। चादर में मुहॅ ढ़ांक कर रोती रही। गाड़ी एक छोटे स्टेशन पर रूकी। फेरी वालों की आवाजें उसके कानों से टकराई तो वह घबरा कर बैठ गई। खिड़की से चन्दन को तलाशने लगी।

''प्यार के खातिर लोग क्या-क्या कर गुजरते हैं। मैंने भी इतना बड़ा कदम उठाया। वह महीनों से मुझे छलता रहा और मैं उसके हाथों कठपुतली बनी नाचती रही। उसने कहा.... और मैं उसके पीछे चल दी। सच हैं कुछ फैसले माता-पिता को शामिल करके ही करने चाहिए। वह स्वयं से बतियाती रही। ''मैं अगले स्टेशन पर उतर जाऊंगी...ये कुछ रूपये रख लो। टिकट बनवा लेना....घर चली जाना।''

डॉक्टर नीला ने समझाया लेकिन वह नहीं मानी। नीला ने सोचा घटनांए इन्सान के जीवन को बनाती हैं और बिगाड़ती हैं। सच दो धारी तलवार की तरह होता हैं। इसने तो प्यार किया था। परिस्थितियों ने उससे ऐसा करवा दिया। नारी का शत्रु कभी समाज होता हैं कभी प्रेमी। लेकिन सबसे बड़ा शत्रु होता हैं उसका प्रेम।

उसने सोचा इस हालत में इसे छोड़ना उचित नहीं होगा। कहीं गलत हाथों में पड़ जायेगी। चेहरे-मोहरे से तो किसी उच्च्च घराने की लगती हैं। तुम चाहों तो मेरे साथ चल सकती हो। तुम्हारे घर वालों को बुलाकर सौंप दूगी। ''नहीं दीदी मुझे आपके साथ

ही रहने दो। नहीं तो मैं आत्म हत्या कर लूंगी....मैं आपके पैर पकड़ती हूॅ...'' रोते हुए बोली ''दीदी अब मैं घर नहीं जा सकती। देव तुल्य पिता की इज्जत को पैरों तले रौंद कर आई हूॅ। ऐेी कृतघ्न औलाद हूॅ मैं। उनके सामने क्या मुॅह लेकर जाऊंगी। आसमान में बादल कभी दिखाई देते और दबे पांव गायब हो जाते। एक-एक बून्द को तरसते लोग मन्दिरों में भजन-कीर्तन करते मस्जिदों में दुआंण पढ़ते। उसे किसी से कोई मतलब नहीं था। गर्मी का दिन...चिलचिलाती धूप में बाहर निकलना कठिन होता। आसमान आग उगलता लेकिन नीला का काम ऐसा था कि मात्र दौड़ में कोई कमी नहीं आई। बच्चे तो दुनियां में आने ही थे और डाक्टर को उनका साथ देना ही था। अनार ने नीला के घर का काम सम्भाल लिया। गहरे रंग का लहंगा चुन्दरी में उस छोटे से गांव के बाजार में इधर-उधर घूमकर अन्नों सामान खरीदती तो कई उल्टी-सीधी बातें कर देतीर। उसने तो कभी कोई काम किया ही नहीं था। सब औरतें उसे हैरत से देखती दांतों तले अंगुली दबा लेतीं और मर्द ललचाई नजरों से देखते। खुसर-पुसर करते।

इतनी सुन्दर, देखने में रईस और नौकरानी का काम?

नीला तो उसे तराशने लगी थी। उसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रसव कराना वह दूसरा काम सिखाने लगी। मुॅह पर कालिख पूतने को दर्द उसे तब और जाना जब उसे ज्ञात हुआ कि चन्दन का अंश उसके गर्भ में पल रहा हैं तो....? नीला ने उसे फिर उबार लिया। पांच साल में अन्नों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। नीला तो चली गई लेकिन वह वहीं बस गई। अन्नों दाई.....अचानक अपने अन्दर की पीड़ा और त्रासदी में गोते लगाने लगी। अब तो मैं चाहूं तब भी लौट सकती। वह स्मृतियों के दंश चुपचाप सहती इस गांव से गहरा रिश्ता जोड़ लिया। माघ महीने की कुनकुती धूप धरती पर पसर गई फिर बून्दा-बून्दी शुरू हो गई। थोड़ी देर बाद जमकर बरसने के बाद वर्षा शांत हो जाती। सूरज बादलों के बीच झांकने लगा। पेड़ पौधे बरसात में नहाकर जैसे ताजा हो जाते। कभी फाल्गुन आता टेसू की लालिमा से गांव रंग जाता। फागुनी बयार से वातावरण मादक बन जाता। खेतों में गेहूॅ लहलहाते तो उसका मन मयूर नाच उठता। उसका पेशा खूब फल-फूल रहा था। लेकिन अकेली औरत भरपूर जवान। कदम-कदम पर परेशानियां आने लगी। एक दिन जागीरदार की हवेली से बुलावा आया। लड़के की खुशी की खबर देने गई। ''बहुत नाम सुना है अन्नों बाई तेरा।'' वह जागीरदार की नजर पर चढ़ गई। कदम-कदम पर परेशनी। हालात ऐसे कि ऐसे में कोई साथ नहीं देता। जब ऐसी ही जिन्दगी गुजारनी हैं तो यहीं सहीं। वह जागीरदार की शरण में आ गई।

मुॅह पर कालिख पूतने को दर्द उसे तब और जाना जब उसे ज्ञात हुआ कि चन्दन का अंश उसके गर्भ में पल रहा हैं तो....? नीला ने उसे फिर उबार लिया। पांच साल में अन्नों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। नीला तो चली गई लेकिन वह वहीं बस गई। अन्नों दाई.....अचानक अपने अन्दर की पीड़ा और त्रासदी में गोते लगाने लगी।

जागीरदार रईस हुसैन ने उसे रहने के लिए एक मकान दे दिय। जिन्दगी में बेफिक्री व चैन तो आ ही गया। लेकिन अपनी दोस्ती के सदके रईस हुसैन अपने कई काम साधता जो अन्नों का दिल गवाह नहीं करता फिर भी करने पड़ते। अन्नों दाई पैदाइशी दाई तो नहीं थी पर अनुभव बहुत था। साधारण प्रसव भी वह हाथोहाथ निपटाने में माहिर थी। गांव की कोई गली ऐसी नहीं थी जहॉ अन्नो दाई के कदम नहीं पड़े। वह तो पूरे गांव की राजदार थी। दाई से कभी पेट छुपता? एक-एक मर्द, औरत, जवान, विधवा, तलाकशुदा व कंवारी सभी औरतों की करतूतों पर परदा डालने वली अन्नों दाई का सबसे गहरा रिश्ता था। जज्बात के बहाव में लड़कियां खुद को लुटाकर उस मंजिल पर पहुॅच जाती थी जहॉ बदनामी की आग उनके पूरे वजूद

को घेर लेती हैं। उनकी माताएं अन्नों दाई के आगे हाथ जोड़ती, मिन्नत करती अपनी इज्जत आबरू बचाने की गुहार करती। मारती पीटती अपनी बेटी को, उसके हवाले करती और एक मोटी रकम उसके कदमों में रख देती।

उस लड़की की जिन्दगी तबाह होने का दर्द....दूसरी तरफ भगवान् का डर। लेकिन उसे अपने दिन याद आ जाते और उनकी जिन्दगी को बचाने का अहसास उसमें साहस भर देता। दिल में भगवान् का ड़र निकल जाता और काली रात की खामोशी के सीने में वो राज दफन कर देती। अतीत कैसा ही मीठा हो कड़वा वह उसे भूलना ही अपना हित समझती। बीस साल का समय कैसे सरका उसे पता ही ना चला। अन्नों दाई यश व कीर्ति के शिखर पर पड़ी थी। बशीरा कॉलेज से निकल कर आया तो कोई काम धन्धा नहीं करता था। बाप की मेहनत मजदूरी की रोटियां तोड़ता अधेड़ होने तक बाप का खून शराब के जरिए पी गया। आखिर बाप भी खतम हो गया। एक दिन भूखा प्यासा अनारकली के द्वार पर आ बैठा। अन्नों को भी अपना अकेलापन खलता था। अपने दिल की बातें किसी को कहना चाहती थीं। बशीरें की बड़ी-बड़ी आंखों में खोकर वह अपने सुख-दुःख की बातें कर लेती। बशीरे ने उसका मन मोह लिया।

''बशीरा मुझ से शादी करेगा?'' तन्हाइयों से उबारकर अन्नों ने एक दिन अचानक पूछा।

''किस बूते पर? मैं तूझे बैठा कर रोटी नही खिला सकता....रोटी तो तुझे ही जुटानी पडेगी।''

वह जोर से हंस दिया।

मृदुला...नहीं तो वह तो अनारकली हैं। बशीरा ने पूछा ''मौलवी को बुला लाऊं।''

दोनों ने निकाह पढ़ ली। बशीरा के हाथ सोने की चिड़िया लग गई। ज्योंही अन्नों के हाथ में रूपये आते वह झपट लेता। कभी मजाक से..तो कभी जोर जबरदस्ती से। अन्नों दाई के पैसों के दम पर दनदनाता फिरता। शराब की नदी में डूबकी लगाकर मकान के सामने बड़ के नीचे पलंग पर पड़ा रहता। अन्नों को शुरू से ही चांदनी रातों में नींद नहीं आती थी। वह लेटे-लेटे देर तक मन में बातें करती मॉ के नाम हवाओं को संदेश देती.....चॉद में छोटी बहन का चेहरा तलाशती--उसकी ऑखें चॉद पर ही टिकी रहती थी। अब भी उसकी रातें सोते-जागते पहले की तरह ही अजनबी घरों और उन औरतों के बीच गुजरती थी जो प्रसव पीड़ा से बेहाल उसके सामने कराहती पड़ी रहती थी। उस वक्त वह अन्नों दाई नही एक हमदर्द मॉ बन जाती। अक्सर, बेहद कमजोर होने के बावजूद भी एक के बाद एक बच्चा जनने को मजबूर औरतें उसके पास आतीं। मर-मर के बच्चे को जन्म देने की तकलीफ उठाती। तब वह अपरना क्रोध उस पर निकालती। फटकारती. . गुस्से में उसके मुॅह से हिन्दी, अंग्रेजी के शब्दों का साफ उच्चारण सुनकर सब उसे हैरत से देखते। उन पर क्रोध बरसाने के बाद उस और का ख्याल भी बहुत रखती। वह औरतों की मजबूरी जानती थी। यह गुस्सा तो मर्दो के प्रति होता था।

''ए बाई तुझे इतनी उमर में भी बच्चे जनने का चाव हैं। अपने पति को क्यों नही कहती बस...।''

कई औरतों से मजाक भी खूब करती।

''ए बीबी अब पता चलेगा कि प्रसव में भी कितना मजा होता हैं।''

बशीरा प्यार तो बहुत जताता लेकिन उसकी कमाई पर राज करता। वह भी सोचती मेरे कौन बैठा हैं खाने वाला। सोचा था बशीरा पढ़ा लिखा समझदार हैं पर हुआ उल्टा। हालात ने अन्नों को तन्हा जिन्दगी जीने को मजबूर कर दिया। अगर किसी औरत को पति से दबते देखती तो उसे शेरनी बनने को उकसाती लेकिन खुद बशीरा के आगे दब्बू बन जाती। यूं तो जागीरदार रईस हुसैन न कई औरतों को अपनी जिन्दगी में साथी बनाया था चाहे घण्टे-दो घण्टों के लिए ही पर अन्नों से दोस्ती पक्की थी। एक दिन हवेली जाते ही रईस हुसैन ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, ''कमरू मोची की बीबी पर मेरा दिल आ गया...अन्नों कुछ कर।''

लेकिन वह नहीं मानेगी...शेरनी हैं फाड़कर खा जायेगी।

''तेरे आगे सब पानी भरती हैं।''

''अच्छा कोशिश करती हूॅ।''

चंदा तालाब पर जा रही थी! अन्नो उसके पीछे चल दी। चंदा तो नाम की नहीं तन से भी चॉद हैं। सफेद दुधिया रंगत की तीस वर्षीय चन्द्री के भाग्य में काली चादर थी। अपने से तिगुनी आयु वाले पति के साथ जिन्दगी की नांव से खेती रही। कुछ महीनों में ही विधवा हो गई। विधवापन की काली चाद की पर्तों में खुद को छिपाने की कोशिश करती पर चांदनी छिटक ही जाती हैं। कमरू की मृत्यु के बाद कई लोग उसे पीछे लगे। कई प्रसव भी आए लेकिन वह नहीं मानी। सास व कमरू के बच्चे ही उसके अपने थे। प्रस्ताव सुनाते ही वह बिफर गई।

''तू क्यों नही बन जाती उसकी रखैल?'' चन्दा ने तड़ से जवाब दिया।

''मैं तो बहुत पहले से ही अपना सब कुछ दे चुकी हूँ बहना। देख चन्द्री मैंने तो बहुत भुगता हैं। सबकों बस एक ही चाह होती हैं। अरे जब ऐसी ही जिन्दगी गुजारनी हैं तो क्यों न एक का दामन पकड़कर बैठा जाय। दर-दर की ठोकरों से क्या होगा?

''हटों मुझे परेशान मत करो अन्नो बाई।''

''कभी किसी ने सताया तो?...इससे तो मैं कहती हूँ कि ऐसे वैसे मर्दों से बचना हैं तो एक की हो ले।''

''मैं यूं ही ठीक हूँ। मैं सब कुछ नहीं चाहती।''

''यह जिन्दगी की सच्चाई हैं तू बच तो नहीं सकती बरबाद तो ये पागल कुत्ते तुझे कर ही देंगे....-जिसके पीछे पड़ते हैं वह बच नहीं सकता।''

''मैं सबका सामना करूँगी।''

''बहना मैं भी ऐसा सोचती थी! पर हार गई.....इसलिए मैंने भी एक का हाथ पकड़ लिया। अकेली औरत का इस दुनिया में रहना बड़ा मुश्किल हैं। तू सोच ले....''

''अगर वो मुझसे निकाह करे तो मैं हवेली आ सकती हूँ।'' उसने कुछ सोचकर कहा।

जागीरदार ने उसका दिल रखने के लिए निकाह कर ली।

''अगर वो मुझसे निकाह करे तो मैं हवेली आ सकती हूँ।'' उसने कुछ सोचकर कहा। जागीरदार ने उसका दिल रखने के लिए निकाह कर ली। वह हवेली में आ गई। दो रात के बाद ही जागीरदार ने उसे उसकी हैसियत बता दी।

वह हवेली में आ गई। दो रात के बाद ही जागीरदार ने उसे उसकी हैसियत बता दी।

''अब बेगम की हाजरी में रह या हवेली से निकल जा....मैं तुझे तलाक देता हूँ।''

''मैंने निकाह की हैं। मैं हवेली से नहीं जाऊँगी।'' चन्द्री जिद पर अड़ गई।

उखड़ी-पुखड़ी दीवारों वाला और खपरैल की छत वाला कमरा, हथेली के पिछवाड़े था उसे रहने के लिए दे दिया। भैसों के बाड़े के पास कमने में पड़ी रोती रही। रोते-रोते उसे साहस आ गया। मैं सामना करूँगी। मेरी बरबादी का बदला लूंगी।

उसने अन्नों को बुला भेजा। अन्नों आई तो उसकी ऑखों में ऑसू नहीं थे। गुस्से की चिनगारियों ने ऑसू सूखा दिए।

जब स्त्री अपने में से अनावश्यक भय व झिझक निकाल देती हैं तो साहस आ ही जाता हैं।

अन्नो के पास आते ही वह भड़क उठी। शेरनी की तरह उस पर टूट पड़ी। चीख-चीख कर सबको बताने लगी।

''इस क्रूरनी ने मेरा धर्म बिगाड़...निकाहा किया..... अब खुदा रसूल का वास्ता देकर तलाक दे रहे हैं।''

''इतना तो मैं भी समझ गई हूँ कि जागीरदार ने निकाह क्यों पढ़ी। ताकि आसानी से तलाक दे सके।''

अन्नो दाई उसे शेरनी की तरह दहाड़ती देख खड़ी रह गई।

''कुरान मजीद में भी लिखा हैं बिना वजह तलाक नहीं हो सकता। मैं ऐसी तलाक को क्यों मानूं जो धोखा देकर दी जा रही हैं।'' चंदा के ललकारने पर उसमें भी हिम्मत पैदा हुई।

''मै ऐसा क्यों नहीं कर सकी? क्या पाया मैंने दब्बू बनकर।'' वह खिसयानी बिल्ली की तरह खड़ी चन्द्री का दहाड़ना सुन रही थी।

चन्द्री का दहाड़ना सुनकर जागीरदार

की मर्दानगी जैसे रूई तरह धुनक कर रह गई। ''इस नकचड़ी को समझा अन्नो।'' इसे मोटी रकम देकर रवाना कर रहा हूँ पर नहीं मानती......''रईस ने कहा।

चंदा ने अन्नो को को गालियां देते हुए कहा ''तुम में हिम्मत होती तो आज तेरी यह हालत नहीं होती। किस लालच से खुद को जागीरदार के पास रहन रख दिया।''

''तूने कितनी औरतों को बिगाड़ा होगा? तेरे कहने पर मैंने निकाह किया।''

चंदा का ऐसा रूप देखा तो अन्नो दाई की ऑखें खुल गई।

''सच हैं मैं क्यों डरूं इन मर्दो से?''

अनार का ग्लानि से सिर नीचा हो गया। मैंने ही इसकी जिन्दगी बिगाड़ी हैं।

''थू हैं तुझ पर अन्नो....'' उसने उस पर थूक दिया।

''एक बात समझकर मैंने निकाह किया हैं अब यहॉ से मरकर ही निकलूंगी! अल्लाह ने मर्दों को तलाक का हक दिया हैं। पर साथ ही बिना वजह तलाक नहीं दे सकते, हिदायत भी दी हैं। पर पुरूष तो सोचता हैं मैं सब कुछ हूँ। जो करूगां मेरी मरजी ही चालेगी।''

वह रईस हुसैन के सामने जाकर खड़ी हो गई।

''तलाक देने का हक तो खुदा ने औरत को भी दिया हैं पर औरत ने कभी बिना कारण पति को तलाक नहीं दिया। कब तक औरतें छली जायेंगी?''

उसकी चेतना का तेज देख कर अन्नो की वर्षो से सोई चेतना जाग उठी। उसने रईस की तरफ देखा। उसे लगा चन्दन और रईस में कोई फरक नहीं। क्रोध से उसकी कनपटियों में रक्त तेजी से प्रवाहित होने लगा। उसके मुँह से हिन्दी और अंग्रेजी के शब्दों का उच्चारण सुनकर सभी उसे आश्चर्य से देखने लगे।

''तूने इससे शादी की हैं। यह औरत कोई आवारा, बदचलन नहीं हैं समझे। जागीरदार यह औरत तेरी पत्नी हैं।'' भीतर का उद्वेग बाहर की सच्चाइयों से दो चार होने लग।

चंदा की खूंखारी को देखकर उसमें भी सोती मृदुला जाग गई। एक टूटी फूॅटी औरत जाग गई। वह हवेली से बाहर आई।

''जो औरत मुहब्बत में डूब सकती हैं वह दिलेर होती हैं और औरत की दिलेरी खतरनाक होती हैं। क्योंकि वह बहुत सच्चाई से मुहब्बत करती हैं। और उतनी ही सच्चाई से मर्दो से नफरत भी कर सकती हैं।

वह सोचती आगे बढ़ रही थी। बाहर से कुछ नहीं बदला। लेकिन मन के भीतर सब कुछ बदल गया। जैसू वह नई जिन्दगी की तरफ कदम बड़ा रही हैं।

अब वह बशीरा के बारे में सोच रही थी। उसका निकम्मापन व बैगरती.. क्यों सहूँ मैं? बरसों से मुझ पर हुक्म चला रहा हैं।

अन्नों ने फैसले के अन्दाज में उसे कहा ''बीवी कमाई पर ऐश करता हैं और उसे ही हरामखोर कहता हैं। हुक्म चलाता हैं! जा बुला ला तेरे मौलवी को आज मैं तुझे तलाक दूंगी. ....तलाक।''

जैसे नंगी डालियों वाले पेड़ अचानक फूलों से लद गए हों, सारी प्रकृति बदल गई।

''अन्नो.....अन्ना दाई!''

वह पुकार सुनकर दरवाजा खोलकर खड़ी गई।

''इसे बचा लो....इसकी मोहब्बत ने इसे जिन्दा लाश बना दिया .... अन्नो...इसे बचा लो।''

''क्या यह......?''

औरत ने बिना कुछ कहे सकारात्मक रूप से सिर हिला दिया और साथ ही प्रश्न सूचक निगाहों से उसे देखा।

वह नादान लड़की खाली-खाली निगाहों से उसे देखकर सिर झुकाए उसके पैर पकड़ने लगी।

अन्नों ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा तो उस लड़की ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और सिसरने लगी। इससे पहले उसके भीतर का दर्द स्नेह ऑसू का सहारा लेकर बाहर आता। एक नादान लड़की की जिन्दगी...खुशियों को बचाने चल दी। उबड़-खाबड़ जमीन पर घास के छोटे-छोटे पोधे उग आए। हरी-हरी पत्तियों के बीच छोटे-छोटे....कहीं पीले, कहीं लाल फूल खिलने लगे। पेड़ों में बया के घौसलें लटक रहे थे। उनमें नई जिन्दगियां पल रही थी। पत्तों पर कभी कोई कीड़ा फूदकता तो अन्नो को लगता मेरी आत्मा भी ऐसे ही......।

समाप्त

बोनस

अपने मोबाईल पर रिचार्ज के एक साथ 6 मैसेज पाकर मैं खुशी से झूम उठा। मैनें रास्तें में 200रू का एक रिचार्ज करवाया था मगर यहां तो 6 रिचार्ज का बैंलेंस 1200रू मेरे मोबाइल फोन में आ गये थे। मुझे मित्रों से मोबाइल फोन पर बात करने का मानो बोनस मिल गया था। अब दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई में बैठे मित्रों से खूब बातें होगी मुफत का टॉकटाईम जो मिल गया था। तभी मेरे मन मस्तिष्क पर वह मासूम बालक नजर आने लगा, जिससे मैंने उस दुकान पर रिचार्ज करवाय था। वह शायद दुकान का नौकर था। पहली बार रिचार्ज कन्फर्म नहीं होने पर वह अपने मोबाईल फोन से ई-टापॅ माध्यम से बार-बार प्रयास करने लगा। आखिर में उसने कहा कि अंकल जी, लगता हैं मोबाईल कंपनी का सर्वर डाउन हैं, आप पैसे दे जाये, आपका फोन रिचार्ज हो जायेगा, थोड़ा समय लग सकता हैं। मैं अविश्वास से उसे 200रू देकर दुकान से बाहर निकल गया। कुछ समय बाद मेरे फोन पर 6 बार रिचार्ज का संदेश मिल गया जिसका तात्पर्य हैं कि उसने 6 बार ई टाप से प्रयास किया। उसकी दुकान खाते से 1200रू निकल कर मेरे मोबाईल फोन पर आ गए। इस आकस्मिक बोनस टॉक टाईम से खूब बातें करने का मौका मिलेगा, मगर उस मासूम बालक के जीवन में क्या गुजरेगी, सोचकर मैं सिहर उठा मुझे मिला सारा अतिरिक्त टॉक टाईम का हर्जाना उसे भुगतान पड़ेगा। मेरी खुशी पर ब्रेक लग गया, मेरा मन बेचैन हो उठा। मेरे कदम उस दुकान की ओर बढ़ चले जहां से मैंने यह फोन रिचार्ज करवाय था। मालिक को इस बात का पता नहीं था, मालिक को अतिरिक्त टॉक टाईम के पूरे पैसे अदा करते हुए मैंने उनसे वचन लिया कि उस बालक को कोई सजा न देंगे। उस मासूम की आंखो में कृतज्ञता के भाव देखकर मैं सुकून महसूस कर रहा था। वह मेरे लिए आत्मसंतुष्टि का बोनस था।

-अशफाक कादरी, बीकानेर, राजस्थान

वह युवक

हम पिछले सप्ताह ट्रेन में सफर कर रहे थे, हमें नीचे की 2 सीटें मिली थी और सामने वाली में एक छोटा सा परिवार बैठा था। पति-पत्नी और नन्हीं सी बालिका। देहरादून से गया तक वो भी हमारे हमसफर थे। बच्ची 2से ढ़ाई का साल की थी। कभी अपनी वाली खिड़की में तो कभी मेरे वाली। जिस तरफ भी प्लेटफार्म आता वो उसी तरफ आ जाती और खिड़की से झांक-झांक कर छोटी-छोटी चीजों की ड़िमान्ड करती। उसके पापा ने एक बार भी उसकी इच्छा को नहीं नकारा। वह भरसक प्रयत्न कर उसे हा चीज लाकर दे रहे थे। उसे गोदी में बिठा खिला-पिला रहे थे। जहां गाड़ी कुछ लम्बे समय के लिये रूकी, वो उसे घुमा भी लायें। इसके अलावा बाकी सारे काम अपने, पत्नि के व बच्ची के वह खुशी-खुशी कर रहे थे। मुझे उन्हें देखकर कई बार काफी अचम्भा भी हुआ। भारत में पैतृक व पुरूष प्रधान समाज में ऐसा सुलझा इन्सान देखकर हैरानी होनी कोई बढ़ी बात न थी। रात का खाना हमने इक्ट्ठा आर्डर किया और साथ में ही खाया। उसने सबकी प्लेटें फटाफट समेटी और बाहर फेंक आए। मुझसे रहा न गया। पूछ ही बैठी, ''बेटा, इतनी क्या जल्दी थी हम खुद कर लेते।'' वह बोला, ''नहीं आप भी मेरे माता-पिता के समान हैं इसमें क्या फर्क पड़ता है। 2 अपनी और 2 आपकी । दुआ ही तो मिलेगी।'' ''ये तो है।'' मैंने कहा। ''पर आजकल ऐसे प्यारे बच्चे कहॉ?'' उसके चेहरे के भाव बदल से गयें। मैंने कहा, 'मैं कल शाम से तुम्हें देख रही हूँ, तुम लगातार काम किये जा रहे हो, थके नहीं।'' उसने जवाब दिया, ''ऑटी, जब मैं 6 साल का था मेरी मॉ मर गई, मेरा भाई साढ़े तीन साल का था। लोगों ने पापा को दूसरी शादी करने को को कहा। उन्होंने की नहीं। वह घर का सारा काम जैसे-तैसे करते और ड्यूटी पर भी जाते। मैं भी उनकी मदद करता। करते-करते आज ये वक्त आ गया और ऑटी बिन मॉ के बच्चे खुद ही सीख जाते हैं सारी जिम्मेदारियॉ निभाना।'' कहते-कहते उसकी

ऑखें भर आई और हम सब शॉत हो गये।

–'kcue 'kek] सिरमौर, हि०प्र०

पिता की आस

''किशन बहुत रो रहा या अब पश्चात से उनका मन जर्जरित हुआ या पिता का अहम समझ गया था। शंकर और सुशीला का बेटा किशन या वह अपने सयय दोस्तो का संग किया सब शराब पीते थे पैसे लेकर मंजा उड़ाते थे। एक बार मॉ से पैसे मॉगा खर्च के लिए मॉ ने प्यारे बेटा पूछा न सौ रूपये दिया बेटा खुशी से दोस्तों के साथ होटल गये सिनेमा गये। इसी तरह मॉगकर माता से जा रहा या एक दिन किशन बहुत देर तक घर न आया पिता पूछा कहॉ गया हैं? तुमने प्यार से सिर पर रखा हैं कुछ थी बाते न सुनना कहनक से आज जमाना बदला हैं। एक मोबाईल पूछा तथा नया जूता ड्रेस पूछ रहा हैं। दिलाना शंकर बताया मेरा पगार पेय तो कम हैं बाड़ा बिजली का बिल, दूध का पैसा, समान लियाना हैं न इतना महंगा पूछने से कैसे -कहा फिर दोनों (माता-पिता) आपस में वादा की किशन ने रोज आपका यही हैं बेटे की मॉग परा न कर सकते हैं घुस्सा करके गया। शंकर ने अपने लिय एक छोटा सा घर बनाना चाहता था, श्रण लिया था एलआईसी० को भरने 5000/-रूपये रखे थे किशन दोपहर आया था मॉ से पैसे न देने के कारण पिता के जेब से एक हजार रूपये मालुम न होने की तरह उठाकर चला। इधर शंकर एलआईसी० भरने पैसे देखा पैसा कम हैं. पत्नी से पूछा तुमने लिया क्या? नहीं कहा, फिर कौन लिया! पैसे फिर पैसे जोड़ना भरने को कष्ट या इसी चिंता में शंकर बेहोश हो गया, सुशीला क्या हुआ आपको रोते हुए पूछा आज भी बेटा 12 बज गया तो घर न आया शराब पीकर बैंक में आते समय गिरकर चोट लगी थी। शंकर सोचा मैं मर गये तो पैसा बहुत मिलेगा पत्नी पुत्र सुख से रहते हैं। शंकर आत्महत्या करने सोचा यही मार्ग हैं क्योंकि पत्नी पुत्र मेरा कष्ट न समझते मैं पढ़ते समय पॉच मील चलकर पैदल एक ही कुरता शर्ट या उसी को पहनकर और एक दोस्त से लेकर बिजली के बिना पढती थी बाद में एक छोटा सा नौकरी मिला। अब आज के बच्चे कुछ न समझते तुम्हारी पुरानी क्या न बताओं आज जमाना बदल गया हैं। कहते थे मेल-जोल न होने के कारण सदा झगड़ा मन पर बहुत परिणाम हुआ। शंकर आत्महत्या कर ली। पत्नी जोर चिल्लाने लगे क्या कर दी आपने बेटा भी अब तक न आया, आबुंलेंस में बेटा को भी लाया दो बज गई बेटा को इस तरह पिता देखों तुम्हारी चिंता में मर गई मॉ शराब पीकर कॉलेज गई मुझे संस्पेड़ा किया मैं दोस्तों के साथ आते समय दुर्घटना हुई। मॉ मुझे माफ करो पिता के जेब से मै ही चुरा ली पैसे पिता के शव के पास बैठकर पश्चाताप से पिताजी माफ कीजिए आपकी बात न सुना मैं पिता ने सब बात अस्पष्ट से सुन रहा था घर आये मरने का यह सहज मृत्यु नही आत्महत्या की हैं। पैसे ज्यादा न आते बताने लगा घर बनाने की आशा दे ही रहा था। पिता की प्राणपक्षी उड़ गई लेकिन बेटा और माता थे क्या हुआ भगवान हम एक तरह सोचते हैं किस्मत की बात अलग हैं पचताने लगा।

-जे० वी० नागरतम्या,

हिन्दी प्रचारक, शिमोगा, कर्नाटक

शेष पृष्ठ 11 का साहित्य और समाज

अंग्रेजों की दासता के पाश में पंगु और पुरूषत्वहीन होने लगा, तब भारतेन्दु एवं गुप्त के साहित्य ने उसे आत्म-जागरण का उमंग-संकुल संदेश दिया। जातीय जीवन के विकास क्रम के साथ यदि साहित्य की गति समान्तर नहीं रही, तो वह जाति जीवन-हीन होकर गुलाम बन जायेगी। यदि गुलाम भारतीयों को दासता के दिन में साहित्य ने साहस और सर्वस्व त्याग का दिव्य-मंत्र नहीं दिया होता तथा गॉधी की अंहिसा का अमृत नहीं पिलाया होता, तो कभी भारत आज की आजादी को नहीं पा सका होता। अतः साहित्य में लोक-कल्याण की सीमा का विस्तार अपरिमेय हैं।,

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विष्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1&20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मषति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मषति सम्मान, बचपना सम्मान 2&20 ls 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री 3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, 4-**सभी आयु वर्ग के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री,** 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथि: 15 tuojh 2022

प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा। खाता धारक का नाम: **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्या: **538702010009259** आई.एफ.एस. कोड: ;ूchvkbZ,u0553875

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विश्व हिन्दी सेवा संस्थान द्वारा शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें :

संगिनी :

रचनाकार :
डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी,
सोनभद्र, उ०प्र०

मनलाभ मंजरी :

रचनाकार :
श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव,
जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

गुफ्तगू :

लेखक :
डॉ० सुधा सिन्हा,
पटना बिहार

संपूर्णम! उत्पाद

भारतीयता बेमिशाल, गुणवत्ता लाजबाब,
विभिन्न प्रकार के स्मृति चिन्ह, मेडल, सजावटी समानों के लिए एक भरोसे मंद, सस्ता और उपयोगी उत्पाद

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।